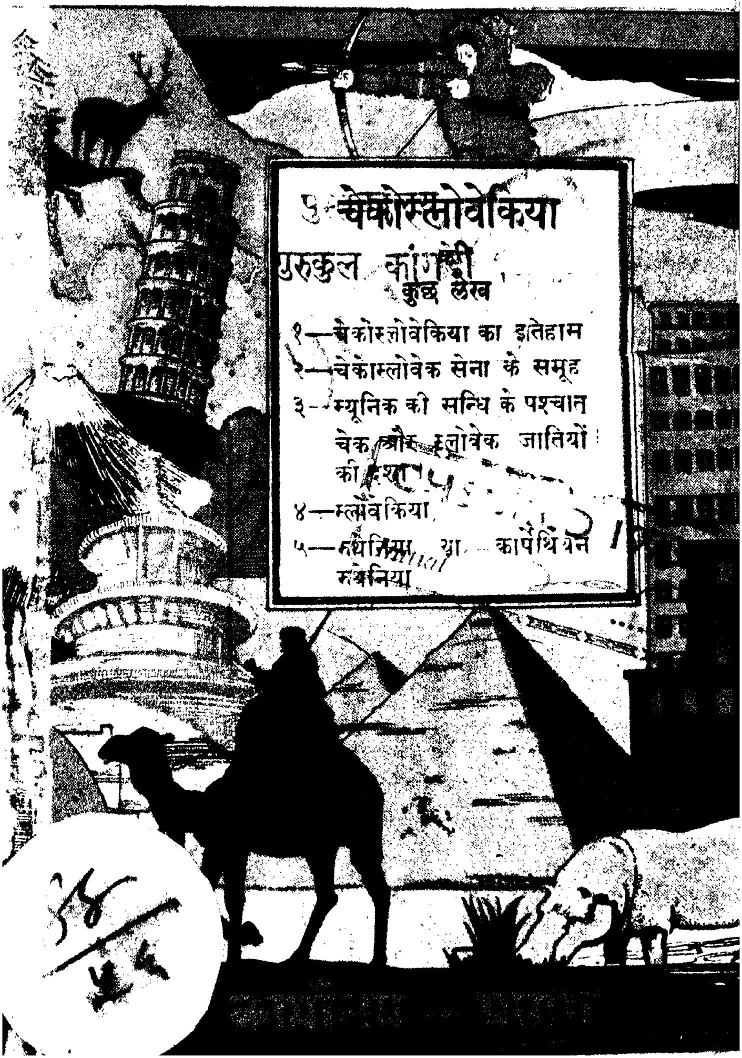
# देश दर्शन

## चेकोस्लोवेकिया



नवम्बर १९३९] **देश-दर्शन** [कार्तिक १९९६

# देश-दर्शन

( पुस्तकाकार सचित्र मासिक )

संख्या ६] चेकोस्लोवेकिया [वर्ष १

## चेकोस्लोवेकिया

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०



प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

| | | | |
|---|---|---|---|
| Annual Subs. | Rs. 4/- | वार्षिक मूल्य | ४) |
| Foreign | Rs. 6/- | विदेश में | ६) |
| Single copy | As. -/6- | एक प्रति | ।=) |

# विषय-सूची


| विषय | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १—स्थिति | ... | ... | १ |
| २—चेकोस्लोवाकिया की आर्थिक स्थिति तथा सिक्का | | | ७ |
| ३—चेकोस्लोवाकिया का आर्थिक विवरण तथा व्यापार | | | १० |
| ४—आनेजाने के मार्ग तथा सामान मँगाने और भेजने के साधन | ... | ... | १४ |
| ५—चेकोस्लोवाकिया का इतिहास... | | ... | १६ |
| ६—चेकोस्लोवेक सेना के समूह ... | | ... | २१ |
| ७—म्यूनिक की संधि के पश्चात् चेक और स्लोवेक जातियों की दशा | ... | ... | २८ |
| ८—चेकोस्लोवाकिया के मसारिक | | ... | ५० |
| ९—विदेश यात्रा ( | ... | ... | ५६ |
| १०—चेकोस्लोवेकिया का जारो स्लैव | | ... | ६२ |
| ११—स्लोवेकिया | ... | ... | ६८ |
| १२—स्लोवेक भाषा | ... | ... | ७४ |
| १३—रूथेनिया या कार्पेथियन रूथेनिया | | ... | ७६ |
| १४—चेकोस्लोवेकिया के प्रसिद्ध नगर | | ... | ८५ |
| १५—चेकोस्लोवेकिया के उद्यम तथा व्यापार | | ... | ९१ |

# स्थान

## चेकोस्लोवेकिया

चेकोस्लोवेकिया का देश मध्य योरुप में स्थित है। इस देश में बोहेमिया, मोरेविया, साइलेशिया प्रान्त का कुछ भाग, भूतपूर्व हंगारी का स्लोवेक प्रदेश और कार-पेथियन-रूथेनिया का स्वतंत्र प्रदेश सम्मिलत है। चेको-स्लोवेकिया के स्वतंत्र प्रजातंत्र राज्य की घोषणा चेको-स्लोवेक लोगों ने १८ अक्टूबर सन् १९१८ में की थी। संट जरमेन, वर्सलीज़ ( वरसाई ) ट्राइनन की संधियों द्वारा चेकोस्लोवेक स्वतंत्र प्रजातंत्र राज्य की घोषणा स्वीकार कर ली गई थी। १९१८ से लेकर १९३८ ई० तक चेकोस्लोवेकिया का स्वतंत्र प्रजातंत्र राज्य बना रहा। किन्तु सन् १९३८ में यह राज्य हिटलर ( जर्मनी ) की कूटनीति का शिकार बन गया और अब यह जर्मनी के अधिकार में है।

इस देश के दो मुख्य भाग थे। पहले भाग में बोहेमिया, मोरेविया और साइलेशिया का भाग सम्मि-लित है। यह भाग बहुत घना बसा हुआ है। इस भाग में उपज भी अच्छी होती है। जर्मन और फ्रांस की सभ्यता तथा कला-कौशल के प्रभाव पड़ने के कारण

और अधिक खनिज पदार्थ मिलने के कारण इस भाग में बड़े बड़े कारखाने हैं। इस भाग में सड़कों और रेलों का जाल बिछा हुआ है। दूसरा कार्पेथियन का पर्वतीय भाग है। इसका क्षेत्रफल ५४,८७७ वर्गमील है। इस भाग की लम्बाई ५६४ मील और चौड़ाई ४५ से १७५ मील तक है। यह भाग पहाड़ी होने के कारण कम बसा है। यहां कारखाने भी बहुत कम हैं और भूमि भी उपजाऊ नहीं है। मोरावा और एल्ब नदियों के बेसिनों ( प्रवाह प्रदेशों ) तथा कार्पेथियन के ऊपर फल, तरकारी तथा अंगूर पैदा होते हैं। यहाँ पर मक्का ही खेती की जाती है। निचले ढालों पर वर्षा बहुत होती है, किन्तु प्रदेश पहाड़ी तथा बंजर है। पूर्वी आल्प्स पर ६०० फुट की ऊँचाई तक खेती होती है। लगभग दो तिहाई भाग में बरफ पड़ती है और डैन्यूब तथा एल्ब नदियाँ लगभग दो महीने तक बरफ़ से ढकी रहती हैं। और उनमें नावें नहीं चल सकतीं। चेकोस्लोवेकिया की प्राकृतिक बनावट तथा जलवायु ऐसी है कि यहाँ योरुप के प्रसिद्ध बन पाये जाते हैं। चेकोस्लोवेकिया के बनों का ५५ फीसदी भाग देवदारु और सनोवर के बनों से




घिरा है। ३० फीसदी में पतझड़ के बन हैं शेष भाग में भिन्न-भिन्न भाँति के वृक्ष पाये जाते हैं।

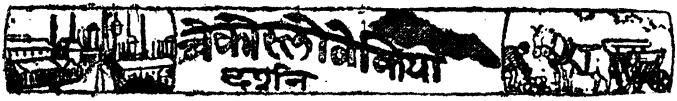
चेकोस्लोवेकिया के राजनैतिक विभाग, जन-संख्या और धर्म :—

१९२३ की जन-संख्या की गणनानुसार इस देश की जन-संख्या १,३६,१३,१७२ थी, जिसमें २,३८,८०८ विदेशी लोग थे। निम्नलिखित चार्ट से हमें चेकोस्लोवेकिया के प्रान्तों की जन-संख्या तथा राष्ट्रीयता का अच्छा ज्ञान होता है :—

| प्रान्त | जन संख्या | चेकोस्लोवाक | जर्मन | मागयार | रूथेनी | यहूदी | पोल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १-बोहेमिया | ६५,७६,८२५ | ६६ ६ | ३२ | .... | ... | ०·१७ | ... |
| २-मोराविया | ६,१६,४३६ | ७८·३ | २०·१ | ... | ... | ०·५८ | ... |
| ३-साइलेशिया | ६,२२,७३८ | ४७·६ | ४०·५ | ... | ... | ०·५१ | ११·२ |
| ४-स्लोवेकिया | २१,५८,५५७ | ६८·१ | ४·७ | २१·५ | २·६ | २·४ | ... |
| ५-कारपेथियन रूथेनिया | ५,११,८०८ | ३·३ | १·७ | १७·० | ६२·२ | १३·३ | ... |
| चेकोस्लोवेकिया | = १,३३,७४,३६४ | ६५·५ | २३·४ | ५·६ | ३·४ | १·४ | ०·६ |

# देश दर्शन

उत्तरी-पूर्वी, उत्तरी-पश्चिमी बोहेमिया, साइलेशिया ब्रूनो और विथना के उत्तर की ओर कारखाने वाले प्रदेशों में सब से कम जर्मन लोग हैं किन्तु यही लोग मुख्य व्यवसायी भी हैं। अब तो चेक और स्लोवेक लोगों की भी संख्या घटाई जा रही है। चेक लोगों की अपेक्षा स्लोवेक जाति वाले कम शिक्षित तथा सभ्य हैं। अब आपस में एक दूसरे के हानि लाभ का ध्यान दिया जाता है और प्रेम भाव बढ़ जाने के कारण कारखानों में चेक और स्लोवेक लोग भी काम करते हैं। जर्मन लोग धीरे धीरे अपना धन कारखानों से हटाते जा रहे हैं और चेकोस्लोवेक लोगों के धनों को आश्रय देते जा रहे हैं। हिटलर के आक्रमण से फिर जर्मनी का बोल बाला हो गया। जैसे जैसे हम पूर्व की ओर जाते हैं वैसे वैसे जन-संख्या कम होती जाती है। जन-संख्या के साथ साथ कारखानों की भी कमी होती जाती है। और खेती की धीरे धीरे वृद्धि होती जाती है। पूर्वी भाग में ग्रीक (यूनानी) धर्म की भी अधिकता होती जाती है। इस भाग में प्राचीन ढंग के मकान बनाये जाते हैं और शिक्षा की बहुत कमी है।




चेकोस्लोवेकिया का मुख्य धर्म रोमन-कैथलिक है। ७६.३ प्रतिशत लोग इस धर्म के मानने वाले हैं। ३.६ प्रति शत लोग ग्रीक चर्च अनुयायी हैं। प्रोटेस्टेन्ट धर्म के मानने वाले ७.२७ फीसदी, चेकोस्लोवेक चर्च वाले ३.८६ फीसदी, यहूदी लोग २.६ फीसदी और १.३२ फीसदी लोगों का कोई धर्म नहीं हैं। स्लैव जाति वाले प्राकृतिक बातों के विश्वासी होने के कारण प्राचीन समय में रोमन कैथलिक धर्म के विरुद्ध बहुत लड़े थे। इन धार्मिक आन्दोलनों में हम स्लैव लोगों के राजनैतिक आन्दोलनों का दृश्य भी देखते हैं। हस्साइस्स और काउन्टर रिफार-मेशन के विरुद्ध जो आन्दोलन चेक जाति ने किया था उसमें भी हमें राजनैतिक आन्दोलन की झलक मिलती है।

आधुनिक खोज से पता लगता है कि प्राचीन काल में एल्ब और ओहरे की घाटियाँ बहुत घनी बसी थीं। यह भाग बड़ा धनी था। आज हम यहाँ के निवासियों में बड़ा अन्तर देखते हैं। काम तथा व्यवसाय के अनुसार लोगों के रहन-सहन और भेष में भी अन्तर आ गया है। कारखाने वाले प्रदेश के निवासी बड़े

बड़े मकानों में रहते हैं। दूसरी ओर बहुत से बेचारे किसान लकड़ी के मकान और झोपड़ों में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। जर्मन लोग चार-पाँच मंज़िल ऊँचे मकानों में रहते हैं। चेक लोग आधे लकड़ी तथा आधे मिट्टी पत्थर से बने मकानों में रहते हैं। स्लोवेक लोग तो झोपड़ों में अपना जीवन व्यतीत करते हैं, जिस प्रकार मकानों में अन्तर हम देखते हैं, उसी प्रकार भिन्न भिन्न स्थानों के निवासियों के रीत-रिवाज, सामाजिक दशा, सभ्यता और भेष-भाव में भी अन्तर पाया जाता है।




## चेकोस्लोवेकिया की आर्थिक स्थिति तथा सिक्का

चेकोस्लोवेकिया के प्रजातंत्र राज्य ने जितना अपना ध्यान अपनी आर्थिक दशा सुधारने की ओर लगाया था उतना और किसी दूसरे कार्य में नहीं लगाया था। इस राज्य ने अपनी टकसाल को भी शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न किया था।

नीचे चेकोस्लोवेकिया के सालाना आय और व्यय का विवरण दिया जाता है। यह संख्या १० लाख क्राउन में है।

| साल | आय | व्यय | प्रजाकार्य में व्यय |
|---|---|---|---|
| १९२४ | १६,३९१ | १६,९९४ | २,२२९ |
| १९२५ | ९,३०१ | ९,५७५ | १,३१९ |
| १९२६ | १०,०८६ | १०,०७० | ... |
| १९२७ | ९,७२४ | ९,७०४ | ... |
| १९२८ | ९,५६२ | ९,५३६ | ... |

प्रथम चेकोस्लोवेकिया की सरकार का ध्यान अपने सिक्कों की ओर १९१९ ही में गया और सरकार ने उसे स्वतन्त्र तथा स्थाई बनाने का प्रयत्न किया था। इस कार्य के आरम्भ में इस बात की

आवश्यकता हुई कि सभी स्टैम्प और आस्ट्रिया-हंगारी के बैंक नोट जो चेकोस्लोवेकिया में चालू थे इकट्ठे कर लिये जायें। इनकी संख्या ३,००,००,००,००,००० थी। यहाँ की सरकार कागज़ी नोट चलाना चाहती थी। इसलिये उसने सभी मुहरदार बैंक नोटों को चेकोस्लोवेकिया राज्य के नोट क़रार दिये। एक बैंकिंग आफिस भी स्थापित किया गया। कुछ दिनों पश्चात् इन बैंक नोटों के स्थान पर राज्य की ओर से नोट चलाये गये। चेकोस्लोवेकिया में एक नेशनल बैंक खोला गया जिसमें १ अरब ४० करोड़ रु० की रक़म रक्खी गई थी। चेकोस्लोवेकिया का गोल्ड स्टैण्डर्ड भी दूसरे देशों के बराबर कर दिया गया।

यहाँ प्राचीन बैंकिंग रिवाज भी प्रचलित था। इससे देहात में भी लोग लेन देन करते थे, उनके अपने सेविंग बैंक आदि भी थे। १९२७ ई० में कुल ३७४ सेविंग बैंक थे और उनमें ५३,२६,००,००,००० क्राउन ( १,६६,७२,५०,००,००० रु० ) थी। इसके सिवा बोहेमिया में भी १७० ऐसी संस्थायें हैं। चेकोस्लोवेकिया में ३० और दूसरे बैंक थे, जिनमें १९१९ में

९१,४०,००,००० क्राउन ( ३,४१,२५,००,००० रु० ) और १९२७ के अन्त में ८,०५,७०,००,००० क्राउन ( ३०,२१,३७,५०,००० रु० ) की रक़म थी। इसके अलावा राज्य के अन्दर राज्य की ओर से पोस्टल चेक आफिस प्रेग में खोला गया और लाइफ इन्श्योरेन्स ( बीमा कम्पनी ) खोली गई जिसमें २ लाख ३० हजार मनुष्यों का बीमा है।

# देश दर्शन

## चेकोस्लोवेकिया का आर्थिक विवरण तथा व्यापार

कारबार—चेकोरलोवेकिया के निवासियों का ३९'५६ प्रतिशत भाग खेती का काम करता है। ३३'८७ फीसदी लोग कारखानों में लगे हैं और १०'६६ फ़ीसदी लोग व्यापारिक जीवन व्यतीत करते हैं। जंगलों से १ करोड़ ५० लाख क्यूबिक मीटर लकड़ी की सालाना प्राप्त होती है, जिसका अधिकांश भाग बाहर भेजा जाता है।

निचले प्रदेशों में ईख, अनाज और जौ पैदा होता है ( जौ की शराब बनाई जाती है ) और ऊँचे प्रदेशों में आलू, चुकन्दर और राई की उपज होती है। चरागाहें और वन अधिकांश भाग में पाये जाते हैं।

१६ अप्रैल सन् १९१९ के पार्लियामेन्ट के क़ानून द्वारा भूमि खेती करने वाले किसानों के बीच बाँट दी गई है। इस विधान से ९,२६,८१७ हेक्टर भूमि पर प्रभाव पड़ा।

खनिज पदार्थ—चेकोस्लोवेकिया में आस्ट्रावा,

क़ारवीना, क्लाडनों और टल्ज़रे की कोयले की खानें हैं। १९२४ में इन खानों से १ करोड़ ४३ लाख ५९ हज़ार ४ सौ १ मेट्रिक टन कोयला निकाला गया और ७३ हज़ार मज़दूर काम कर रहे थे। उत्तरी-पश्चिमी बोहेमिया में लिगनाइट (अच्छा कोयला) पाया जाता है, १९२४ में २ करोड़ ५ लाख ७ हज़ार १ सौ ७८ मेट्रिक टन लिगनाइट निकाला गया और ४६ हज़ार मज़दूर काम कर रहे थे। बोहेमिया और स्लोवेकिया में लोहा पाया जाता है। किन्तु यहाँ जितना लोहा निकलता है उससे काम नहीं चलता। इसलिये स्वीडन से लोहा मँगाया जाता है। चेकोस्लोवेकिया में चीनी मिट्टी बहुत पाई जाती है। कोलीन (एक प्रकार की चिकनी मिट्टी) बहुत प्रसिद्ध है। इसके बने हुये बरतन देश के अन्दर भी काम में लाये जाते हैं और विदेश को भी भेजे जाते हैं। बोहेमिया और दक्षिणी मोरेविया में सालाना ४ लाख टन चीनी मिट्टी के बर्तन तयार किये जाते हैं। भाप तथा बिजली की शक्तियों के प्रयोग का भी यथा सम्भव प्रयत्न किया जा रहा है।

कारबार—यहाँ खेती से जो वस्तुएँ पैदा होती

हैं उनसे यहाँ के किसानों के काम और धंधे चलते हैं। इनमें गुड़, चीनी और शक्कर के कारखाने प्रसिद्ध हैं। यहाँ १७० चीनी साफ करने के कारखाने हैं। १६२५ ई० में १४,२६,५५७ टन चीनी तयार हुई जिसमें से १० लाख १५ हज़ार १ सौ ५५ टन चीनी बाहर भेजी गई। १६२६ ई० में १५ लाख १० हज़ार २ सौ २६ टन चीनी तयार हुई और १० लाख ७० हज़ार ४ सौ ७१ टन चीनी बाहर भेजी गई। चीनी के बाहर भेजेने के व्यापार में चेकोस्लोवेकिया का दूसरा (जर्मनी के बाद) नम्बर योरुप में रहा। चीनी बनाने वाले दूसरे देशों से इसका नम्बर ऊपर रहा है। यहाँ की शराब अपनी अच्छाइयों के कारण दुनियाँ में प्रसिद्ध हैं। इसके सिवा यहाँ मेवा का रस, फल, तरकारी आदि की भी उपज होती है और उनसे बाहरी व्यापार होता है। इस देश में पिलसेन बियर अल्कोहल ४ लाख हिक्टोलिटरेस सालाना तयार किया जाता है। चेकोस्लोवेकिया से मांस भी बाहर भेजा जाता है। यहाँ के कारखानों में २० लाख टन लोहा तयार किया जाता है।




शीशे तथा मिट्टी के बर्तन बनाने के भी बहुत से कारखाने हैं। यहाँ १४० शीशे के कारखाने हैं और उनमें ३० हज़ार व्यक्ति काम कर रहे हैं। इनमें हर तरह की चीज़ें बनाई जाती हैं। इसके सिवा ७० हज़ार काम करने वाले लोग भी इसी शीशे के काम में लगे हैं। सजावट के सामान हार तथा मालों के गुरिया बनाते हैं। चीनी के मिट्टी के कारखानों में ६५ हज़ार मज़दूर काम करते हैं।

चेकोस्लोवेकिया के जंगलों में बहुत लकड़ी पाई जाती है और उससे कई प्रकार की वस्तुएँ बनाई जाती हैं। यहां ६० काग़ज़ के कारखाने, ३८ कार्डबोर्ड के कारखाने, २७ हड्डियों के सामान बनाने के कारखाने और ८० लकड़ी चीरने तथा साफ करने के कारखाने हैं। तयार सामान का बहुत बड़ा भाग बाहर भेजा जाता है। ऊनी और सूती कपड़े बनाने वाले कारखानों में भी लगभग २ लाख ७० हज़ार मज़दूर काम कर रहे हैं। यहाँ ५३ रेशम कातने के भी कारखाने हैं। चमड़े का सामान तयार करने के लिये भी बड़े बड़े कारखाने हैं।

## आने जाने के मार्ग तथा सामान मँगाने और भेजने के साधन

चेकोस्लोवेकिया में १५ हज़ार २ सौ ८४ किलीमीटर रेलवे लाइन है। ११०७६ किलीमीटर लाइन सरकार की है और ३०५ केलीमीटर प्राइवेट हैं। यह रेलवे बहुत ज़रूरी है क्योंकि पूर्वी और पश्चिमी योरूप को यह जोड़ती है और सदैव मुसाफिरो से भरी रहती है। यहाँ नदियाँ आदि भी बहुत काम की हैं। उत्तरी सागर में एल्ब तथा मोल्डाओ दोनों नदियाँ गिरती हैं। इस समुद्र तट पर हैम्बर्ग नामक चेकोस्लोवेकिया का प्रसिद्ध बन्दर-गाह है। डैन्यूब नदी इस देश को काले सागर से मिलाती है। लगभग ४१८ किलीमीटर में स्टीमर तथा जहाज चल सकते हैं। १६२५ ई० में बाहर जाने वाले और आने वाले सामान का १३ फीसदी सामान नदियों द्वारा आया और गया है। सन् १६२६ में कुल ४५४२ पोस्ट आफिस २०,५६५ किलीमीटर टेलीग्राफ है।

१६२० से २६ तक जितने का सामान विदेश गया और आया वह संख्या १० लाख क्राउन में दी गई हैं।




| साल | अन्दर आया | बाहर गया | अधिकता |
| --- | --- | --- | --- |
| १९२० | २३,३८४ | २७,५६९ | ४१८५ |
| १९२२ | १६,६९६ | १८,०८६ | ५३९० |
| २९२४ | १५,८५५ | १७,०२५ | ११८० |
| १९२५ | १७,५९४ | १८,७९९ | १२०५ |
| १९२६ | १५,२६४ | १५,४५४ | २५९४ |

डैन्यूब नदी के राज्यों, जरमनी, पोलैण्ड, पश्चिमी योरुप और दूसरे जगहों से चेकोस्लोवेकिया में कच्चा माल आता है और यहाँ से चीनी, सूती कपड़े, ऊनी कपड़े, फ्लेक्स, जूट का सामान, लकड़ी, कोयला, शीशा, लोहे का सामान, चमड़ा, मिट्टी के तेल, फल और तरकारियाँ इत्यादि सामान बाहर भेजे जाते हैं।

# चेकोस्लोवेकिया का इतिहास

## प्रजातन्त्र राज्य का उत्थान

उन्नसवीं शताब्दी में मध्य योरप के देशों में राष्ट्रीयता का भाव बढ़ रहा था। आस्ट्रिया हंगारी के देशों में यह भावना बड़ी प्रज्वलित थी। १८४८ ई० की क्रान्ति ने राष्ट्रीय भावना को और भी अधिक बढ़ा दिया। पोल तथा चेक जातियाँ भी जागृत हो उठीं और अपनी स्वतंत्रता का स्वप्न देखने लगीं।

आस्ट्रिया के जर्मन निवासी अब भी अपने को मध्य योरुपीय (जर्मन के सिवा दूसरी जातियों का) स्वामी समझते थे और उनके साथ बराबरी का भाव नहीं रखते थे। जर्मन लोग इन लोगों की राष्ट्रीयता के प्रश्न पर कुछ भी विचार नहीं करते थे और उन पर मनमाना अत्याचार करते थे। मध्यवर्ती योरुप के देश इस समय जर्मन आस्ट्रियन और मेगायर (माजार) जातियों के आधीन थे।

तीस साला युद्ध के समय चेक जाति की स्वतंत्रता छीनी गई थी, किन्तु राष्ट्रीयता का भाव उनके बीच से कभी नहीं गया। उन्नीसवीं शताब्दी में उन्होंने अपने बीच

के मतभेद को मिटाने का बड़ा प्रयत्न किया। जब १९१४ का युद्ध छिड़ा तो बोहेमिया, मोरेविया और साइलेशिया के प्रान्तों में चेक जाति ने जर्मन जाति के अत्याचारों का मुक़ाबिला किया। हंगारी राज्य के अन्दर भी स्लोवेक जाति माजार जाति के प्रभाव को नष्ट करने का प्रयत्न कर रही थी। इन सभों को पूरा विश्वास था कि १९१४ की लड़ाई का प्रभाव उनकी स्वतंत्रता के संग्राम पर अच्छा पड़ेगा। चेक जाति का प्रेम पश्चिमी प्रजातंत्र की ओर अधिक था और स्लोवेक लोग मध्यवर्ती योरुपीय शासन के विरुद्ध रूस के साथ थे। चेक सेना ने अपने ऊपर किये जाने वाले अत्याचारों का सामना किया और बहुत सी चेक सेना अँग्रेज़ी तथा फ्रांसीसी सेना के साथ जर्मन सेना के विरुद्ध जा मिली। नई नई संस्थाएँ जर्मन के विरुद्ध प्रचार करने के लिये छिपे ढंग पर काम करने लगीं। चेक और स्लोवेक लोग जो देश से राजनैतिक अपराधों के कारण निकाल दिये गये थे वे आस्ट्रिया के विरुद्ध योरुपीय देशों में प्रचार करने लगे।

प्रोफेसर मसारिक रियलिस्ट पार्टी का नेता था। वह बहुत समय तक पार्लियामेन्ट और आस्ट्रिया-हंगारी

डेलीगेशन का सदस्य रह चुका था। मसारिक आस्ट्रिया की शासन-प्रणाली के विरुद्ध था। वह आस्ट्रिया की विदेशी नीति का कट्टर विरोधी था। जब योरुपीय युद्ध का आरम्भ हुआ तो उसने निर्णय कर लिया कि इस का अन्त रूसी सीमा में न होकर पश्चिमी सीमा पर होगा। किन्तु स्लोवेक लोग रूसी सेना की शक्ति पर विश्वास करते थे। इसलिये वे समझते थे कि युद्ध का अन्त रूस ही करेगा।

जब मसारिक स्विट्ज़रलैण्ड होकर इटली को जा रहा था तो उसे पता चला कि आस्ट्रियन पुलिस उसे गिरफ्तार करना चाहती है। इसलिये मसारिक ने बाहर ही रहना अधिक अच्छा समझा और आस्ट्रिया-हंगारी के विरुद्ध प्रचार करने लगा। मसारिक छिपे तौर पर अपने देश की संस्थाओं से भी परामर्श करता रहता था और चेकोस्लैव प्रश्न को राजनैतिक संधि के सामने रखना चाहता था।

चेकोस्लैव सेना के बाहर आजाने के कारण बाहरी लोगों ने अपनी सेना को संगठित किया और दूसरे साथियों की सेनाओं में भी अपनी सेनायें बना लीं।

इन लोगों ने राजनैतिक क्षेत्र में प्रचार करने में जो व्यय होता था उसका अधिकांश बोझ अपने ऊपर उठा लिया।

कुछ राजनीतिज्ञों का यह विचार था कि आस्ट्रिया-हंगारी ही योरुपीय शक्ति रूपी तराज़ू के भार को बराबर किये हैं और वे चेकोस्लोवेक प्रश्न को एक देश की भीतरी मामूली बात समझते थे। उनका ख्याल था आस्ट्रिया, हंगारी जर्मनी से अलग कर दिये जाँय जिससे जर्मनी की शक्ति क्षीण हो जावे। उनका यह विचार ठीक न था क्योंकि युद्ध के पश्चात् जब आस्ट्रिया हंगारी की ताकत क्षीण हो गई तो भी तटस्थ देशों और मित्र देशों के भीतर से आस्ट्रियन राजनैतिक भाव का निकालना बहुत कठिन हो गया था।

बाहरी कमेटी की बनावट :—इस कमेटी के मुख्य सदस्य मसारिक, डाक्टर वेनेस, स्टैफानिक ड्यूरिच थे। जब तक डाक्टर वेनेस नहीं आये तब तक यह कमेटी स्विट्ज़रलैण्ड में काम करती रही। डाक्टर वेनेस के आने के पश्चात् मसारिक ने लन्दन में अपना कार्य-क्षेत्र बनाया। डाक्टर वेनेस केन्द्रीय, बाहरी कमेटी का मंत्री

था। वह स्टैफानिक ( स्लोवेक वैज्ञानिक ) को लेकर पेरिस चला गया। जहाँ वह फ्राँसीसी सेना में काम करने लगा। ड्यूरिच रूस में चेक कमेटी में कार्य की देख भाल कर रहा था।

थोड़े दिनों के पश्चात् चेकोस्लोवेक कमेटी बन गई जो अपनी आवाज़ आस्ट्रिया-हंगारी के विरुद्ध उठाने लगी। १४ नवम्बर सन् १९१५ में चेकोस्लोवेक नेता ( जो अमरीका, रूस और दूसरे देशों में रहते थे ) मसारिक तथा ड्यूरिच के हस्ताक्षर के साथ एक एलान निकाला गया। यह पहली घोषणा थी जिसमें चेकोस्लोवेक जाति ने अपने को आस्ट्रिया-हंगारी के विरुद्ध बतलाया और अपनी स्वतंत्रा पर ज़ोर दिया। १९१६ में यह कमेटी बदल कर राष्ट्रीय चेक काउन्सिल बन गई। इसका प्रेसीडेन्ट मसारिक, वाइस प्रेसीडेन्ट जोज़फ ड्यूरिच और सेक्रेटरी डाक्टर बेनेस हुए। स्लोवेक लोगों की ओर से जनरल स्टैफानिक इस काउन्सिल में थे।




# चेकोस्लोवेक सेना के समूह

जनवरी १६१७ ई० में चेकोस्लोवेक आन्दोलन को काफी सफलता प्राप्त हुई। जब प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने संधि करने के लिये लिखा तो अलाइड (मित्र) सेना ने अपनी संधि की शर्तों में चेकोस्लोवेकिया की स्वतंत्रता भी रक्खी। जनवरी १६१६ में ज़ार स्लोवेक कैदियों को छोड़ने पर राज़ी हो गया। दूसरी जुलाई सन् १६१७ को केरेन्सकी (रूस) चेक लोगों को अपनी सेना में भर्ती करने लगा। मार्च १६१७ की रूस की क्रान्ति के कारण वहाँ की सेना शक्तिहीन हो गई थी। इसलिये फ्राँस की सरकार और चेकोस्लोवेक राष्ट्रीय काउन्सिल के बीच एक संधि हुई कि चेक सेना फ्रांस भेजी जाय और प्रेसीडेन्ट खायन केरे की १६ दिसम्बर सन् १६१७ की डिग्री के अनुसार फ्रांस में चेकोस्लोवेक की स्वतंत्र सेना बनाई गई।

मई सन् १६१७ में मसारिक इङ्गलैण्ड से रूस गया और वहाँ के चेक आन्दोलन का भार लिया। जब

अक्टूबर सन् १६१७ की रूसी चणिक गवर्नमेन्ट हुई तो स्वतंत्र चेक सेना बनाई गई।

सन् १६१६ ई० में बोहेमिया में बड़ा अत्याचार हुआ और बहुत फांसियाँ हुईं। पुलिस और सैनिक राज्य के कारण राजनैतिक जीवन असह्य हो गया। फ्रेंसिस जोज़फ की मृत्यु तथा १६१७ के रूसी क्रान्ति के पश्चात् कुछ दशा सुधरने लगी। वियना के राइस्टाक की बैठक में सदस्यों ने आस्ट्रो-हंगेरियन पालिसी बदलने की आवाज़ उठाई और भिन्न भिन्न राष्ट्रों को मिलाकर एक संघ शासन की योजना बनाने पर ज़ोर दिया। जिसमें सभी राष्ट्रों को बराबर अधिकार देने की बात कही गई। जून सन् १६१७ की स्टाकहाल्म की सोशलिस्ट पीस कांग्रेस में चेक सोशल डेमोक्रेट सदस्यों ने एक चेकोस्लोवेक डोमीनियन बनाने की दृढ़ प्रतिज्ञा की और बड़े ज़ोरों से औपनिवेशिक स्वराज्य की आवाज़ उठाई।

बोल्शेविक क्रान्ति के बाद, जब मसारिक ने कहा कि चेक सेना किसी प्रकार भी रूसी मामले में दखल न देगी तो बोल्शेविकों ने व्लाडीवोस्टक होकर फ्रांस को चेक सेना जाने की अनुमति दे दी। एक सेना व्लाडी

वोस्टक होकर फ्रांस भेजी गई। इसी समय चेकोस्लोवेक सेना फ्रांस से इटली आई तो जनरल स्टैफानिक और आरलैन्डो के बीच अप्रैल सन् १६१८ में यह बात तय हुई कि जो चेकोस्लोवेक भागे हुये इटली में हैं उनकी एक सेना रूसी ढंग पर बनाई जावे।

इसी बीच आपस के कुछ झगड़े होने के कारण बोल्शेविक सरकार और चेक सेना में तना तनी हो गई और लड़ाई होने लगी। चेक सेना के हथियार छीनकर उसे निहत्था करना चाहता था। चेक नैशनल काउन्सिल इसके विरुद्ध थी। इसी बात में साइबेरिया प्रान्त में दोनों के बीच लड़ाई आरम्भ हो गई। चेकोस्लोवेक सेना ने साइबेरिया की रेलवे लाइनों पर इर्कुटस्क तक कब्जा कर लिया और बैकाल तथा चीता रेलवे के ५००० मील तक अधिकार जमा लिया।

मसारिक मई सन् १६१८ में अमेरिका पहुंचा और वहां रूस के विरुद्ध साइबेरिया में चेकोस्लोवेक सेना के लिये सहायता मांगी। वाशिंगटन में जापान और अमरीका के बीच इस बारे में संधि हुई। इसके पश्चात् चेक सेना को साइबेरिया में सामान भेजा गया, एक जापानी

सेना भी सहायता को भेजी गई। चेकोस्लोवेक सेना को वाल्गा और साइबेरिया में सफलता प्राप्त हुई जिसके कारण हलचल मच गई। चेक सेना ने सब से बड़ा कार्य यह किया कि साइबेरिया से जो सहायता जर्मनी और रूस को मिल सकती थी वह रुक गई और जो जर्मन सैनिक (बहुत बड़ी संख्या में) साइबेरिया में थे वह जर्मनी न पहुँच सके। ११ सितम्बर सन् १९१८ में लायड जार्ज ने नैशनल काउन्सिल को इसके लिये धन्यवाद दिया कि उसने चेकोस्लोवेक सेना द्वारा मित्र सेना का बड़ा उपकार किया है। इसके पश्चात् अमरीका फ्रांस, इटली, जापान आदि सभी राष्ट्रों ने चेकोस्लोवेक सेना की स्वतंत्रता तथा सहायता स्वीकार कर ली और चेकोस्लोवेकिया की राष्ट्रीय काउन्सिल को चेकोस्लोवेक जाति का सच्चा प्रतिनिधि माना।

१४ अक्तूबर सन् १९१८ में पेरिस में चेकोस्लोवेक सरकार की स्थापना हुई। इस गवर्नमेन्ट को राष्ट्रीय काउन्सिल के प्रेसीडेन्ट ने बनाया था। डाक्टर बेनेस बैदेशिक मंत्री बनाया गया। इसको अमेरिका, जापान, इटली, फ्राँस, इंगलैण्ड आदि सभी राष्ट्रों ने मान लिया




इस प्रकार चेकोस्लोवेकिया के स्वतंत्र राज्य की स्थापना हुई।

२८ अक्तूबर को प्रेग की नेशनल कमेटी ने चेकोस्लोवेकिया राज्य के स्वतंत्रता की घोषणा की। १४ नवम्बर सन् १६१८ को चेकोस्लोवेक नेशनल असेम्बली की बैठक हुई। इसके सदस्य अपनी पार्टी के शक्ति के अनुसार चुने गये थे। नेशनल असेम्बली में कुल २५६ सदस्य थे। जिनमें ४४ स्लोवेक और शेष चेक लोग थे। जर्मन सदस्यों ने इनमें भाग लेने से ही इन्कार कर दिया था। इस लिये इन सदस्यों में कोई भी जर्मन नहीं था।

मसारिक बहुमत से चेकोस्लोवेकिया का प्रथम प्रेसीडेन्ट चुना गया। अस्थायी विधानानुसार एक सरकार बनाई गई। क्रैमार प्रधान मंत्री चुना गया। बेनेस को वैदेशिक मंत्री का स्थान प्रदान किया गया और जनरल स्टैफानिक को वार मिनिस्टर (युद्ध मंत्री) बनाया गया। २१ दिसम्बर को मसारिक (प्रेसीडेन्ट) प्रेग को लौटकर आया और उसने चेकोस्लोवेक आन्दोलन का संक्षेप में वर्णन नेशनल असेम्बली के सामने किया और सदस्यों

से चेकोस्लोवेकिया के प्रजातंत्र राज्य को संगठित करने और ठोस कार्यों को पूरा करने की अपील की।

क्रैमार की मिनिस्ट्री में ४ हंगेरियन तीन, चेकोस्लोवेक नैशनल सोशलिस्ट, तीन सोशल डिमाक्रैटस, तीन नैशनल डिमाक्रैटस, एक पीपुल पार्टी और एक स्लोवेक सदस्य थे। बेनेस और स्टेफानिक (नान पार्टी) के सदस्य थे। यह सरकार आठ महीने तक रही।

इस काल में बोहेमिया और मोरेवियन (जर्मन भाषा प्रयोग करने वाले) प्रान्तों में आन्दोलन आस्ट्रिया के साथ मिलने के लिये हुआ किन्तु आन्दोलन सैनिक शक्ति द्वारा दबा दिया गया। स्लोवेकिया प्रान्त में भी मागयार लोगों के कारण उपद्रव हुआ किन्तु इसको भी दबा दिया गया। टेश्चेन प्रान्त में पोल लोगों से झगड़ा हुआ किन्तु संधि कान्फ्रेन्स ने इस मामले को भी तय कर दिया।

आठ महीने के छोटे से समय में चेकोस्लोवेकिया की इस सरकार ने ज़रूरी आर्थिक तथा सामाजिक सुधार किये। मज़दूरों के कार्य का समय ८ घंटा प्रतिदिन नियत कर दिया गया। भूमि के बारे में भी आवश्यकतानुसार क़ानून बनाये गये।

आस्ट्रिया और निकटवर्ती दूसरे देशों से संधि की गई और शीघ्र ही आपस में मित्रता का भाव स्थापित हो गया।

इस प्रकार चेकोस्लोवेकिया का स्वतंत्र प्रजातंत्र राज्य सन् १६१८ से १६३७ ई० तक स्थापित रहा। १६३८ ई० में हिटलर की कूटनीति के कारण चेकोस्लोवेकिया फिर जर्मन साम्राज्य के अन्दर शामिल कर लिया गया।

# देश दर्शन

## म्यूनिक की संधि के पश्चात् चेक और स्लोवेक जातियों की दशा

२६ सितम्बर सन् १६३८ ई० को म्यूनिक की संधि हुई। इस संधि से यह अनुमान किया जा चुका था कि चेकोस्लोवेकिया का प्रजातंत्र राज्य थोड़े समय में ही नष्ट हो जावेगा। म्यूनिक की संधि में ही चेको-स्लोवेकिया का तिहाई भाग और उसके राष्ट्रीय धन का चालीस प्रतिशत छीना जा चुका था। इसकी सरहद ऐसी बनाई गई जिससे इसको आर्थिक हानि हुई और इसके साथ साथ इसे दूसरे आसपास के देशों के भरोसे रहना पड़ा। आर्थिक सहायता के लिये यह देश पश्चिमी देशों की ओर देख रहा था। इन्होंने सहायता देने का वचन दिया था। किन्तु पश्चिम की ओर से उसे बहुत कम सहायता मिली और जर्मनी ने तो ऐसी चुपकी साधी कि शायद वह किसी प्रकार के (चेकोस्लोवेकिया के) मामले में दखल देना ही नहीं चाहता।

म्यूनिक के पश्चात् प्रेग में एक नये राज्य की

स्थापना हुई। इस नई सरकार का लीडर रूडाल्फ बेरान था। यह एग्रेरियन पार्टी का नेता था। इस नई सरकार की नीति यह थी कि वह बर्लिन सरकार के किसी प्रकार के झगड़ों में नहीं पड़ना चाहती थी और उससे मित्रता रखना चाहती थी। देश के भीतर इसकी नीति यह थी कि प्रत्येक राष्ट्रीय सामाजिक माँग की पूर्ति हो। नाज़ियों के विरुद्ध प्रचार बन्द कर दिये जाँय। इस सरकार ने रायक ( जर्मनी ) को यह भी आज्ञा दे दी कि वह चेकोस्लोवेकिया के मध्य हो कर राज मार्ग भी बना ले। कुछ समय के पश्चात् बर्लिन की ओर से यह कहा गया कि जर्मनी चेकोस्लोवेकिया के जर्मन निवासियों का अन्तिम निर्णय कर देना चाहता है। यह बात बार बार करके कई बार दुहराई गई।

म्यूनिक की संधि के पश्चात् ४ लाख जर्मन भाषा बोलने वाले, ६० लाख स्लैव लोगों के बीच फैला दिये गये। इन लोगों के फैलाने का मुख्य उद्देश्य यह था कि स्लोवेक जाति, चेक जाति के विरुद्ध हो जाय और चेक संघ-शासन से अलग हो जाय। नाज़ी लोग किसी न किसी भांति चेक संघ-शासन को तोड़ना

चाहते थे। वियना के ब्राड-कास्टिंग स्टेशन से इस बात पर बार बार ज़ोर दिया गया। यद्यपि नेशनल एसेम्बली में जर्मन आदि सभी जातियों के प्रतिनिधि मौजूद थे। हर एक जाति की शक्ति के अनुसार उसके प्रतिनिधि भी चुने जाते थे। अपर ( बड़ा ) और लोअर ( छोटा ) चैम्बर दोनों के सदस्य मिलकर प्रसीडेन्ट का चुनाव करते थे और सरकार में सदैव ५ या ७ पार्टी के लोग रहते थे। केवल समाजवाद ( कम्यूनिज़्म ) और नाज़ी पार्टी के लोग सरकार से अलग रक्खे जाते थे। बोहेमिया, मोरेविया, स्लोवेकिया और कार्पेथो-यूक्रेन चारों प्रान्तों के अपने अपने अलग अलग गवर्नर तथा डायट ( धारासभायें ) भी थीं। ६ अक्तूबर सन् १६३८ को स्लोवेक लोगों ने अपनी स्वतंत्रता की मांग पेश की। इसलिये चेकोस्लोवेकिया का एक नया विधान निर्वाचित किया गया जिसमें चेक, स्लोवेक और कार्पेथो-यूक्रेन तीनों प्रान्त अपने नये विधान के अनुसार राज्य चलाने को थे। केवल वैदेशिक नीति, फौज और कुछ आर्थिक बातें संघ-शासन के अधिकार में रहने को थीं।

राइक (जर्मनी) तो किसी भी दशा में चेकोस्लोवे-

किया का राज्य बाक़ी नहीं रखना चाहता था। इसलिये उसने देश में एक प्रकार का ग़दर फैला दिया। इस काम में नाज़ी लोगों ने कुछ स्लोवेक मनुष्यों को मिला कर काम लिया। ऊपरी तौर पर जर्मनी ने कहा कि चेकोस्लोवेकिया की भीतरी दशा खराब है और वहां के लोगों ने जर्मनों से प्रार्थना की है कि वह उनकी रक्षा करे।

१० मार्च को डाक्टर टिसो की कैबिनेट ने स्लोवेक के अलग होने की घोषणा की। किन्तु प्रेग की सरकार ने वाइस प्रीमियर सिडोर की सहायता से टिसो की सरकार को निकाल दिया और एक दूसरी सरकार स्थापित की। सिडोर ने यह भी ऐलान किया कि जो व्यक्ति स्लोवेकिया को अलग करना चाहता है वह देश-द्रोही है और बड़ा भारी पापी है। जब बर्लिन में यह सूचना पहुँची तो बड़ी अप्रसन्नता प्रगट की गई।

नाज़ी लोगों ने टिसो को कहा कि वह हिटलर से जाकर भेंट करे। १४ मार्च को स्लोवेकिया प्रान्तीय पार्लियामेन्ट की बैठक ब्राटिसलावा में हुई। इस बैठक में यह बात साफ साफ कह दी गई थी कि स्लोवेकिया

के अलग होने के सिवा और दूसरी बात जर्मनी को कदापि मन्जूर न होगी और यदि निर्णय जर्मनी के विरुद्ध होगा तो वह ( जर्मनी ) स्लोवेकिया को हंगारी से बदल लेगा। तीन बार पार्लियामेन्ट के वोट ( मत ) लिये गये और अंत में स्लोवेकिया को अलग हो जाने का प्रस्ताव पास किया गया। जब यह बात प्रेग पहुंची तो वहां की सरकार ने ब्राडकास्ट किया कि चेक लोग हृदय से स्लोवेक लोगों के विरुद्ध नहीं हैं और सभी प्रकार उनकी सुधरी अच्छी दशा देखना चाहते हैं।

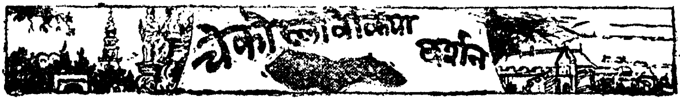
स्लोवेक प्रान्त के अलग हो जाने से कार्पेथियन रुथेनियन ( कार्पेथियन यूक्रेन ) को भी अपनी मर्ज़ी के विरुद्ध अलग होना पड़ा। इसलिये चुस्ट नगर की सरकार ने अपने अलग होने की घोषणा की। २४ घंटे के पश्चात् ही हंगारी की सेनायें इस प्रान्त में घुस आईं और प्रान्त पर अधिकार जमा लिया। यद्यपि हंगारी ने यहाँ के निवासियों के अधिकारों की रक्षा करने का वचन दिया है तो भी यह बात सम्भव नहीं है। जब हंगारी की दूसरी जातियों के अधिकारों की रक्षा नहीं

हुई तो कार्पेथियन रुथेनियन के अधिकारों की रक्षा कैसे हो सकती है ?

अब बोहेमिया और मोरेविया के दो प्रान्त शेष रह गये। यह दोनों प्रान्त बड़े उपजाऊ हैं। यहां पर बड़े बड़े कारखाने थे। यह भाग बड़ा घना बसा है। कला-कौशल की दृष्टि से भी यह प्रान्त बहुत चढ़े बढ़े थे। चेक लोग यहां के मुख्य निवासी थे। यह लोग अपनी सभ्यता, चतुरता और कला-कौशल के लिये योरुप में प्रसिद्ध थे।

डाक्टर बेनेस के अस्तीफा देने के पश्चात् हाशा ( Hacha ) प्रेसीडेन्ट चुना गया। इसकी अवस्था ६७ साल की थी। यह हाईकोर्ट का चीफ रह चुका था और कानून सम्बन्धी बातों में बड़ा ज्ञानी तथा चतुर था। स्लोवेकिया और कार्पेथियन यूक्रेन को साफ करने के बाद चान्सलर हिटलर ने प्रेसीडेन्ट हाशा को १४ मार्च को अपने पास भेंट करने के लिये बुलाया। हाशा अपनी पुत्री और बैदेशिक मन्त्री चवाल्कोवस्की को साथ लेकर गया। बर्लिन में उसका बड़े हाव भाव से ऊपरी सत्कार किया गया। रात को उसके साथ जो ब्यवहार किया गया और पांच घंटे तक हिटलर तथा उसके मिनिस्टर

हाशा के बीच जो बात चीत हुई, वह बाहरी दुनिया को नहीं बताया गया। किन्तु यह बात विदित हो चुकी है कि जो मांगें हिटलर ने पेश कीं उसे सुनकर हाशा बेहोश हो गया और उसको होश में लाने के लिये डाक्टर बुलाया गया था। पांच घंटे के भीतर वह कई बार मूर्छित हुआ। हाशा को कहा गया कि वह बोहेमिया और मोरेविया के प्रोटेक्टरेट वाले कागज़ पर हस्ताक्षर कर दे, नहीं तो सबेरे पाँच बजे गोला बरसाने वाले जर्मन बिना किसी चेतावनी के प्रेग आदि बड़े नगरों पर गोलाबारी करेंगे और सारी जनता तथा नगरों को बर्बाद कर देंगें। इस प्रकार की धमकियों के सुनने के पश्चात् बेचारे प्रेसीडेन्ट हाशा ने अपने हस्ताक्षर प्रोटेक्टरेट के कागज़ पर कर दिये और चेक जाति और सम्पत्ति फ्यूहरर (हिटलर) के हाथों सौंप दी गई। इसी बीच जर्मन फौज़ें मोटर द्वारा चेक प्रान्त में मोराव्स्का, ओस्ट्रावा आदि नगरों में पहुँच गईं। राइक की ओर से ७ सेनाएँ बोहेमिया पर अधिकार जमाने को भेजी गईं। जब हाशा प्रेग में लौट कर आया तो जर्मन सेनापति ( कमान्डर ) ने उससे भेंट की। उसके बाद गेस्टापो ने पहुँच कर सभी संदेहजनक लोगों को गिर-




फ़्तार कर लिया, जिनके नामों को सूची पहले से ही बनी हुई थी। इसके सिवा सभी संदेहजनक स्थानों पर फ़ौजें डाल दी गईं। उसी दिन दोपहर के बाद हिटलर भी ह्राडकानी किले में पहुंच गया। उस किले से चेकोस्लोवेकिया का झंडा उतार कर जर्मन झंडा लगा दिया गया। ता: १६ मार्च सन् १९३८ को प्रोटेक्टोरेट की डिग्री की घोषणा सरकारी तौर पर कर दी गई।

यद्यपि २२ घंटे पहले हिटलर और हाशा के बीच बर्लिन में संधि हुई थी। किन्तु उसकी कुछ भी परवाह न की गई और एक जीती हुई जाति की भाँति जर्मन जाति ने चेक जाति पर आर्डिनेन्स तथा डिग्री लागू कर दिये। इनके ऊपर चान्सलर हिटलर गृहमन्त्री फ्रीक और वैदेशिक मन्त्री वान रिबेनट्राप के हस्ताक्षर थे। और किसी चेक मनुष्य का हस्ताक्षर न था।

जर्मन सरकार ने अपनी घोषणा में बताया कि चेकोस्लोवेक राज्य की सारी भूमि अब जर्मन राज्य की भूमि हो गई और जर्मन राइक बोहेमिया और मोरेविया के प्रान्त औपनिवेशिक राज्य करेंगे तो भी जर्मन राइक अपने अधिकारों की रक्षा के लिये एक प्रोटेक्टोरेट

नियुक्त करेगा। प्रोटेक्टोरेट को सभी प्रकार की शक्तियाँ प्रदान की गई हैं। वह कानूनों को रद्द तथा भंग कर सकता है। अपनी आज्ञा तथा डिग्री देश में जारी कर सकता है, अपना स्वयं कानून बना सकता है। प्रोटेक्टोरेट प्रान्तों के किसी भाग या पूरे भाग को लेकर राइक का शासन चला सकता है। राइक को अधिकार है कि वह बोहेमिया और मोरेविया प्रान्त में अपनी सेनाएँ रख सकता है और किलों को मज़बूत बना सकता है। आने जाने के साधनों, रेल, तार, पोस्ट, टेलीग्राफ, टेलीफोन आदि सभी वस्तुएँ राइक के अधिकार में हैं, राइक का सिक्का भी चलेगा। चुंगी आदि के लेने का अधिकार भी राइक को है। इन सब बातों के बदले बोहेमिया और मोरेविया प्रान्त अपना एक प्रतिनिधि जर्मन राइक में भेज सकते हैं। वह प्रतिनिध मिनिस्टर ( मन्त्री ) कहलायेगा। प्रोटेक्टर को अपनी डिग्री या कानून के बदलने का भी अधिकार है।

राइक के प्रोटेक्टर का आफिस प्रेग में है। उसके पास १६ विभाग हैं। प्रोटेक्टर के १८ सलाहकार हैं। यह लोग बोहेमिया और मोरेविया के सारे प्रान्त में फैले हुए हैं।

सेना तथा और दूसरे लोगों द्वारा प्रोटेक्टोरेट के अधिकार भी सीमित हैं। पहले यह बात सोची जाती थी कि शायद प्रोटेक्टर चेक गवर्नमेन्ट का सलाहकार ही रहे, किन्तु सचमुच यह बात नहीं है। प्रेसीडेन्ट ( प्रधान ) को बिलकुल अधिकार नहीं है। सारी शक्ति ( कानून बनाने तथा शासन करने की ) प्रोटेक्टोरेट के हाथ में है। प्रेसीडेन्ट की कैबिनेट तो है किन्तु उसे किसी प्रकार का कोई अधिकार नहीं है। सूडेटन की पुरानी पार्टी को काफी अधिकार दिये गये हैं। इस पार्टी के लोग बड़े बड़े पदों पर नियुक्त कर दिये गये हैं। कोनराद हेनलोन सिविल शासन का प्रधान बनाया गया है। के० एच० फ्रैंक स्टेट सेक्रेट्री के स्थान पर नियुक्त किया गया है और प्रोटेक्टोरेट की पुलिस का प्रधान है।

कहने को तो आटानोमस ( स्वतंत्र ) चेक सरकार और प्रोटेक्टर दोनों शासन करते हैं। किन्तु सचमुच शासन प्रोटेक्टर का है। आटानोमस ( स्वतंत्र ) सरकार बिना प्रोटेक्टर आफिस की आज्ञा के कुछ भी नहीं कर सकती। न्याय विभाग, पुलिस और अदालतों में जर्मन

राइक ने ऐसे कानून लागू कर दिये हैं कि उनका ठीक तौर पर चलाना भी कठिन हो रहा है।

राइक के डिग्री के अनुसार बोहेमिया और मोरेविया के जर्मन निवासी जर्मन राष्ट्र के नागरिक बना दिये गये हैं और १९३५ के राइक के विधान के अनुसार वे रायक के नागरिक बन गये हैं। इसलिये जर्मन की रक्षा वाला कानून उनके लिये भी लागू हो गया है। जितने लोग जर्मनी भाषा के प्रयोग करने वाले वह राइक की प्रजा माने जाते हैं और राइक के कानून उन पर लागू हैं। बाकी दूसरे निवासी प्रोटेक्टर के अधिकार में हैं। जब किसी जर्मन व्यक्ति का कोई मुकदमा होता है तब राइक से जज उसके लिये भेजा जाता है। सभी प्रकार के कानून रायक के अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिये लागू कर दिये गए हैं। इस प्रकार २० वीं शताब्दी में १३ वीं शताब्दी की शासन प्रणाली का प्रयोग मोरेमिया तथा बोहेविया प्रान्तों में जर्मन रायक द्वारा हो रहा है।

म्युनिसिपल मामलों में भी चेक लोगों के अधिकार छीन लिये गये हैं। किसी भी नगर में जर्मन लोगों की




अधिकता नहीं है, इसलिये प्राकृतिक भाव से ही चेक लोगों का अधिकार होना चाहिये था किन्तु जिहलावा, सेस्के बूडेजोवाइस, ब्रनो, मोराव्स्का आस्ट्रावा, ओलोमाउक आदि नगरों का प्रबन्ध जर्मन लोगों के अधिकार में है। ४ लाख से अधिक चेक निवासियों को उनके अधिकार से वंचित किया गया है और उनकी आवाज़ नहीं सुनी जाती।

प्रोटेक्टर को दिये गये अधिकारों द्वारा जर्मन लोग मोरेविया और बोहेमिया प्रान्तों में जर्मन लोगों को बसाना चाहते हैं। इन प्रान्तों की जन संख्या राइक की से कहीं घनी है। तो भी ज़बरदस्ती जर्मनों को इन प्रान्तों में घुसेड़ा जारहा है। नाज़ी लोगों का उद्देश्य जर्मनी का एक बड़ा राज्य स्थापित करने का है। यहां निवासियों से उनकी जीवन प्रणाली को बदल देने के लिये कहा जा रहा है। जर्मन मैनेजरों की देख भाल में स्लोवेक स्त्रियां काम करती हैं और देश निवासियों को जर्मन लोगों की बनाई हुई वस्तुओं के प्रयोग करने के लिये कहा जा रहा है। जर्मन राइक में स्लोवेक और चेक लोगों को स्थान दिया गया है और इस प्रकार जर्मनी एक प्रकार के साम्राज्य-वाद का स्वप्न देख रहा है।

# देश दर्शन

नाज़ी राज्य उसी भाँति चेकोस्लोवेकिया में राज्य कर रहा है, जिस प्रकार उसने अपने यहाँ के यहूदियों के साथ किया है। जब चेक आटानोमस सरकार ने नूरेन वर्ग के कानूनों को लागू नहीं किया तो प्रोटेक्टर ने मामला अपने हाथ में ले लिया और जितने कारखानों में यहूदियों का एक भी यहूदी का हिस्सा है वह कारखाना जर्मन लोगों को दे दिया जाता है। जो चेक या यहूदी बाहर चले गये हैं या नाज़ियों के विरुद्ध हैं उनके कारखाने भी जर्मनों को दे दिये जाते हैं। धीरे धीरे सभी बड़े बड़े कारखाने जर्मनों के हाथों में कर देने की कोशिश की जा रही है। पहले चेकोस्लोवेकिया की मोहर लगी हुई वस्तुएँ बहुत बड़ी मात्रा में बाहर भेजी जाती थीं किन्तु अब यह बात नहीं है। अब चेकोस्लोवेकिया के स्थान पर राइक की मुहर लगाई जाती है। इसी तरह यहां के मज़दूर जर्मनी ले जाये जाते हैं। गत जून में १ लाख से अधिक चेक मज़दूर जर्मन ले जाये गये।

चेक लोगों की राष्ट्रीयता को कुचलने के लिये तरह तरह की तरकीबें की जा रही हैं। कोनराड हेनलीन की ६ जुलाई की डिक्री (जो साज़ नगर में निकली गई है)

उनके अनुसार ४,००,००० एकड़ भूमि चेक लोगों से लेकर पुराने मालिकों को वापस दे दी गई है। गत चेकोस्लोवेकिया सरकार की सारी भूमि तथा सम्पत्ति बिना किसी मावज़ा दिये ही रायक की बना दी गई है।

जर्मनी ने चेकोस्लोवेकिया के सारे सुरक्षित सोना ( रिज़र्व गोल्ड ) पर अपना अधिकार कर लिया है। छठीं मार्च सन १९३९ की संधि के अनुसार चेकोस्लो-वेक राष्ट्रीय बैंक ने ४०० लाख मार्क जर्मनी को दे दिया। स्विटज़रलैण्ड के बैंक में चेकोस्लोवेकिया का जो रुपया था उसको रायक ने रायक बैंक को दे देने के लिये कहा। स्विटज़रलैण्ड के नेशनल बैंक ने ५०० लाख स्विस क्राउन दिये। इसी प्रकार बासेल बैंक ने ४० लाख और लन्दन बैंक ने ६० लाख दिये। इस प्रकार चेकोस्लोवेकिया ने जर्मनी को ८,०६,१५,००० गोल्ड डालर दिये।

राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन के साथ साथ चेक लोगों की सभ्यता को भी मिटाने का प्रयत्न हो रहा है। लगभग २००० चेक पत्रों का निकलना बन्द करा दिया गया है। वर्तमान समय में वहां ३५०००

शिक्षित लोग बेकार हैं। चेक पत्र बर्लिन से आई हुई खबरों को ही छाप सकते हैं और दूसरी खबरों के छापने का उन्हें अधिकार नहीं है। चेक लोगों के प्रेस, बोलने और सभा करने की स्वतंत्रता के साथ साथ उनके चलने फिरने की स्वतंत्रता भी छीन ली गई है। गेस्टेपो की आज्ञा के बिना कोई व्यक्ति प्रोटेक्टोरेट का छोड़ नहीं सकता।

स्लोवेकिया की दशा वोहेमिया और मोरेविया से कुछ भिन्न है। वह रायक का भाग नहीं है वरन् नाम के लिये अभी स्वतंत्र है। १५ मार्च को प्रधान मन्त्री टिसो ने चान्सलर हिटलर से कहा कि वह स्लोवेकिया को अपनी संरक्षता में ले लें। हिटलर ने बात स्वीकार कर ली और उसी के अनुसार १८ मार्च को २५ साल के लिये एक संधि हुई। जिसके अनुसार स्लोवेकिया जर्मन संरक्षता में आ गया और स्लोवेकिया ने बचन दिया कि उसकी वैदेशिक नीति जर्मनी के आदेशानुसार होगी। स्लोवेक लोगों ने जर्मनी को सुसज्जित सेना भी दिया और क़िलों को बनाने तथा मज़बूत करने का अधिकार दिया। अगस्त की १८ ता० को यह अधिकार

और भी बढ़ा दिया गया और जर्मनी को सारी सरहद पर किले बनाने का अधिकार हो गया। २८ अगस्त की रात को जर्मन सेना ने सारे स्लोवेकिया प्रान्त पर अधिकार जमा लिया और मारशल ला ( फौज़ी कानून ) जारी कर दिया गया। इस प्रकार स्लोवेकिया की रही सही स्वतंत्रता भी रायक ने नष्ट भ्रष्ट कर डाली।

प्रोटेक्टोरेट की भांति स्लोवेकिया में भी १,२८,००० जर्मन लोग चारों ओर भ्रमण करते हैं। और वे अपने को राष्ट्रीय समाजवादी ( नेशनल सोशलिट ) कहते हैं। उनके नेता कारमासिन ने ब्राटिस्लावा नगर में अपने भाषण में कहा था कि हम लोग राष्ट्रीय समाजवादी हैं, इसलिये हमको हिटलर का कहना मानना चाहिये। हमको किञ्चितमात्र भी उसकी आज्ञा मानने में आगा पीछा न करना चाहिये। उसकी आज्ञा प्रतिपालन करना ही हमारा धर्म है। हमको उसने यहाँ रहने और इस भूमि को जर्मन बनाने की आज्ञा दी है। हम वही कर रहे हैं। जहाँ वह हमें रहने को कहे वहाँ हमें रहना जहाँ हमें जाने को कहे वहाँ हमें जाना है। यही हमारा मुख्य कर्तव्य है।

# देश दर्शन

जुलाई सन् १९३९ में स्लोवेकिया का एक नया विधान बनाया गया है। इसके अनुसार यह देश क्रिश्चियन नेशनल रिपब्लिक कहलाता है। इसके अनुसार देश में केवल एक पार्टी रह सकती है। और वह पार्टी स्वर्गीय फादर हलिन्का को मानने वाली है। इस पार्टी के मेम्बर बनकर स्लोवेक सरकार में भाग ले सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को कारपोरेशन का मेम्बर होना पड़ता है। सेनेट के स्थान पर स्टेट काउन्सिल बनाई गई है। इसमें कार्पोरेशन, हलिन्का पार्टी, राष्ट्रीय सदस्य, कैबिनेट के सदस्य और पार्लियामेन्ट के भेजे हुए सदस्य रहते हैं। अलग अलग कमेटियों द्वारा सरकार राजनैतिक सामाजिक आदि जीवनों पर अधिकार रक्खेगी। पार्लियामेन्ट प्रेसीडेन्ट का चुनाव करती है और उसकी अवधि ७ साल की होती है। प्रेसीडेन्ट के अधिकार अथारिटेरियन स्टेट की भांति होते हैं।

स्लोवेकिया कोई धनी देश नहीं है। यहाँ की जनसंख्या २६,५६,००० है। यहाँ के निवासी ५६ प्रतिशत खेती तथा जंगल के कामों में लगे हैं। यहाँ के बजट का दो तिहाई भी यहाँ के टैक्स से नहीं वसूल होता। यहाँ




महाजनों की भी बहुत कमी है। पिछले २० सालों में १७,००,००,००,००० क्राउन चेकोस्लोवेकिया प्रजातंत्र राज्य ने स्लोवेकिया को दिया। वर्तमान समय में स्लोवेकिया की सहायता केवल जर्मनी कर सकता है। वह भी सहायता तभी होगी जब उसे अपनी स्वतंत्रता के अधिकार छोड़ देने पड़ेंगे।

योरुप के महायुद्ध के बाद दुनिया के लोगों ने मध्य योरुप की बनावट पर बड़ी टीका टिप्पणी की थी और कहा था कि यह कार्य विल्सन के नियम के विरुद्ध है। विल्सन के नियमानुसार किसी देश का राज्य उसी देश के जनता को निर्माण करना चाहिये। म्यूनिक में नाज़ी लोगों ने भी यही कहा था कि वह लोग इस नियम को चेकोस्लोवेकिया में अपने जर्मन भाइयों पर लागू करना चाहते हैं। आज हम देख रहे हैं कि उस नियम का जर्मनी ने किस तरह पालन किया है। सूडेटेन लैण्ड, चेकोस्लोवेकिया, पोलैण्ड आदि देशों पर यह नियम किस प्रकार लागू किया गया है। मालूम होता है कि नेशनल सोशलिस्ट सिद्धान्त केवल जर्मन लोगों पर ही लागू होता है।

जर्मन और चेक लोगों के बीच बड़ा अन्तर है। यह अन्तर केवल जातीय ही नहीं है। उनके रहन-सहन के साधन, जीवन और विचारों में भी भारी अन्तर है। चेक लोग नाज़ी नीति को नहीं समझ सकते और यदि कुछ समझते हैं तो वे उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। नाज़ी लोग उनके अन्दर नाज़ीयता भरना चाहते हैं किन्तु वे इससे बहुत दूर भागते हैं। वे आत्म गौरव रखते हैं। अपने को एक राष्ट्र मानते हैं, जहाँ वे रहते हैं उसे अपना देश मानते हैं। वह यह बात नहीं मानते कि १७०० ई० के पहले चेकोस्लोवेकिया उनका देश नहीं था। गत वर्ष जब प्रेसीडेन्ट हाशा ने उन्हें नेशनल यूनियन को अपनाने को कहा तो २० वर्ष तक के युवकों ने उसे ऐसा अपनाया कि उसके ९९'२५ फीसदी सदस्य बन गये। आज इस यूनियन के तोड़ने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। गत ग्रीष्म ऋतु में जनरल गाजडा भी अपनी नेशनल फैसिस्ट पार्टी के साथ नेशनल यूनियन से आकर मिल गया है।

नेशनल यूनियन का सभापति हाशा है। इसका मुख्य कार्य यह है कि चेक लोगों को वह उनकी वर्तमान



स्थिति समझायें, उनके भीतर राष्ट्रीयता का भाव जागृत करता रहे। आपस में मेल जोल तथा संगठन को दृढ़ बनाता रहे। यह यूनियन समाजवाद के विरुद्ध हैं। किन्तु समाज कोआपरेटिव ( सहकारी ) संगठन के मार्ग पर चलाना चाहती है। अपनी आर्थिक सामाजिक सभ्यता को इसने १२ कमेटियों में बाँट दिया है। आशा है कि यदि संगठन जारी रहा तो नाज़ीवाद की खराबी दूर हो जावेगी।

चेक लोग इतिहास का अध्ययन एक बड़े रूप में करते हैं। वे स्वयं बहुत समय तक दूसरों के अधिकार में रहे हैं और बहुत समय तक स्वतंत्र तथा आराम और चैन से रहे हैं। उन्होंने बड़े बड़े राज्यों का उत्थान तथा पतन देखा है। बड़े बड़े विजयी लोगों को आते जाते देखा है। दुश्मनों को दोस्त और दोस्तों को दुश्मन बनते देखा है। इसलिये वे आशा रखते हैं कि कभी न कभी उनके दुश्मन अवश्य कमज़ोर हो जायेंगे। हाँ वे अपनी राष्ट्रीयता को अवश्य जागृत रखना चाहते हैं।

चेक लोगों को उनकी हार पर चारों ओर से हमदर्दी के समाचार आये। रूस, अमरीका, फ्राँस,

इंगलैएड आदि सभी राष्ट्रों ने दुःख प्रकट किया और चेक जाति के साथ प्रेम दरसाया।

चेकोस्लोवेकिया के जो राजदूत अमरीका, कनाडा, इङ्गलैएड, फ्राँस, पोलैंड, रूस, आयरलैएड, पैलेस्टाइन, मिस्र आदि देशों में थे उन्होंने जर्मन माँग को नहीं माना। उन्होंने कहा कि चेकोस्लोवेकिया प्रजातंत्र राज्य अभी समाप्त नहीं हुआ। वे अब भी अपने देश के राजदूत बने हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने वाशिंगटन में रहने वाले चेकोस्लोवेकिया के राजदूत को मानने से इन्कार नहीं किया और दूसरे बड़े राज्यों ने भी संयुक्तराष्ट्र की भाँति ही किया। चेकोस्लोवेक कोर (फौज) की घोषणा, डाक्टर बेनेस की दिलेरी और और वाहरी चेक, स्लैव और यूक्रेन लोगों की संस्था का काम बड़ा संतोषजनक है। यह लाग फिर मिलकर वैदेशिक जुआ कन्धे से उतार फेंकना चाहते हैं।

बोहेमिया, मोरेविया के चेक लोग अपनी राष्ट्रीय भावना को सुरक्षित रक्खे हैं। वे सभी प्रकार के अत्याचारों को सहन करने के लिये तयार हैं। वे लोग किसी भी दशा में अपना देशप्रेम भूलना नहीं चाहते।



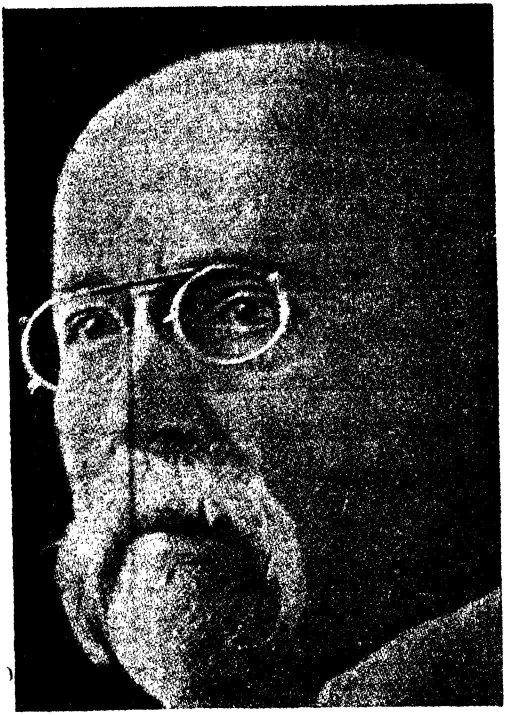

यद्यपि इस समय उनका कोई साथी नहीं है, उन पर किसी प्रकार का अत्याचार हो सकता है तो भी दुनियाँ उनको नहीं भूल सकती, और जब तक वे स्वतंत्र न हो जावेंगे तब तक योरुप में शान्ति स्थापित होना कठिन है।




# चेकोस्लोवेकिया के मसारिक

चेकोस्लोवेकिया को आज़ाद कराने वाले और प्रथम राष्ट्रपति टामस गेरीग मसारिक का जन्म १८५० की ७ मार्च को मोरेविया की सीमा के पास होडोनिन नगर में हुआ था। मसारिक का बाप एक आस्ट्रियन जागीरदार के यहाँ एक सईस था। बचपन में मसारिक को कुछ चेक भाषा और टूटी फूटी जर्मन भाषा सिखाई गई थी। पहले चेक स्कूल में पढ़ाने के बाद मसारिक एक दो वर्ष के लिये जर्मन स्कूल में भेजा गया। उसके माता पिता उसे शिक्षक बनाना चाहते थे। पीछे से उन्होंने एक ताला बनाने वाले के पास काम सीखने के लिये मसारिक को लगा दिया। इसके बाद मसारिक वियना में एक लुहार के यहाँ काम करने लगा। १८६५ में मसारिक के एक पुराने अध्यापक ने उसके माता पिता को

पढ़ाई जारी रखने के लिये समझाया। मसारिक ने एक वर्ष में इन्ट्रेन्स परीक्षा पास कर ली। फिर वह ब्रुन नगर



चेकोस्लोवेकिया को आज़ाद कराने वाले प्रथम राष्ट्रपति मसारिक।

में ऊँची पढ़ाई की तैयारी करने लगा। पढ़ाई का खर्च वह ट्यूशन करके पूरा करता था। यहीं वह क्रान्ति की

ओर झुकने लगा। अन्ध परम्परा में उसे अविश्वास हो गया। कनफेशन (पाप स्वीकार) न करने के कारण उसे पढ़ाई के लिए वियना जाना पड़ा। उत्तम ढंग से उत्तीर्ण होने पर वियना के विश्वविद्यालय में वह फिलासफी (दर्शन शास्त्र) पढ़ाने के लिये नियुक्त हुआ।

मसारिक के काम को समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि सातवीं सदी में बोहेमिया और आठवीं सदी में मोरेविया स्वतंत्र राज्य थे। स्लोवेकिया को विजयी मेगायर लोगों ने हंगारी में मिला लिया था। इसके बाद आस्ट्रिया के सम्राट ने बोहेमिया को अपने साम्राज्य में मिलाने का प्रयत्न किया।

मसारिक सत्य का अनुयाई था। एक बार कुछ बनावटी हस्त-लिखित प्रतियाँ मिलीं जो बोहेमिया का गौरव बढ़ाने वाली थीं। मसारिक ने निर्भय होकर उनकी पोल खोली। इससे उसके कुछ देश-वासी उससे नाराज़ हो गये। उसका उद्देश्य था कि गौरव सच्चाई में है। १८५१ में नवयुवक चेक दल ने मसारिक को शाही धारा सभा का सदस्य चुना। १६०८ में मसारिक ने आष्ट्रिया हंगारी की जालसाज़ी का भेद खोलकर कई देश-भक्त

स्लैव लोगों को बचाया। इससे सरकार बहुत नाराज़ हो गई। लेकिन उसके देशवासियों में उसका मान बहुत बढ़ गया।

१६१० में न केवल चेक वरन् दक्षिणी स्लैव लोग भी मसारिक को अपना नेता मानने लगे। जब १६१४ में बड़ी लडाई छिड़ी तब मसारिक ने अपना कर्तव्य एकदम निश्चित कर लिया। उसे यह आशा न थी कि आस्ट्रिया हंगारी की शाही सरकार अल्पसंख्यक लोगों के साथ न्याय का व्यवहार करेगी। अतः वह आष्ट्रिया हंगारी के साम्राज्य को नष्ट करने और मित्र राष्ट्रों को सहायता करने में लग गया।

दूसरी राष्ट्रीय काउन्सिल का संगठन करने के बाद मसारिक ने आष्ट्रिया का राज्य छोड़ दिया। पहले वह कुछ समय तक स्विटज़रलैण्ड में रहा। फिर वह पेरिस चला गया। वहीं उसने चेक लोगों की ओर से आस्ट्रिया पर युद्ध घोषित कर दिया। पहले पेरिस में फिर वह लन्दन के किंगस कालेज में अध्यापक नियुक्त हुआ। यहीं से वह आष्ट्रिया के साम्राज्य को नष्ट करने का प्रयत्न लगातार करता रहा।

१६१७ में रूसी क्रान्ति के बाद जो कैदी छूटे उनको संगठित करके मसारिक ने ६२,००० सिपाहियों की एक चेक सेना तैयार की। यह फौज रूसी सेना के पास मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ती रही जब बोल्शेविक लोगों ने जर्मनी से ब्रेस्टलिटोव्स्क की संधि कर ली तब मसारिक के लिये रूसी सीमा के पास लड़ना असम्भव हो गया। योरुप से साइबेरिया होकर मसारिक इस सेना को प्रशान्त महासागर तट पर व्लाडीबोस्टक को ले गया। यहाँ से वह संयुक्त राष्ट्र अमरीका गया। मई १६१८ में संयुक्त राष्ट्र अमरीका में जहाँ जहाँ चेक लोग अधिक संख्या में थे वहाँ वहाँ उसने सभा की। व्याख्यान दिये और राष्ट्रीय आन्दोलन के लिये चन्दा इकट्ठा किया। इस बीच में १६१८ के अक्तूबर में आष्ट्रिया का राज्य लड़खड़ाने लगा। संयुक्त राष्ट्र अमरीका और मित्र राष्ट्रों ने मसारिक की राष्ट्रीय काउन्सिल को चेकोस्लोवेकिया की सरकार के रूप में स्वीकृत कर लिया। इस प्रकार मसारिक ने अपने लगातार प्रयत्न से एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर दिया। १६२० में वह वहाँ का राष्ट्रपति चुना गया।



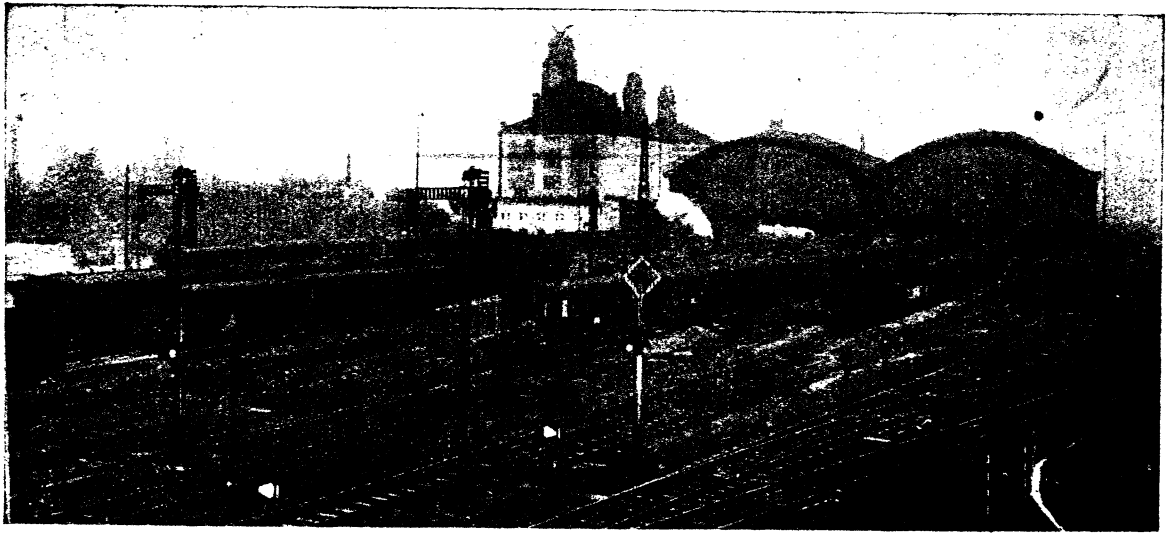

सारे राष्ट्र की शक्ति अपने हाथ में आ जाने पर भी मसारिक बड़ा नम्र रहा। उसने अल्पसंख्यक जातियों के हितों की सदा रक्षा की। उसका कहना था कि अपने देश, भाषा और जाति को प्यार करो। अपने सभी देश-वासियों से मित्रता का व्यवहार करो चाहे उनमें और तुम में भाषा और धर्म का भेद भले ही हो। विद्यार्थियों में वह बहुत ही प्रिय था। गाँवों की सामूहिक ड्रिल उसकी एक अनोखी और उपयोगी सूझ थी। मसारिक इतना लोकप्रिय रहा कि १९२७ में दूसरी बार फिर वह ७ वर्ष के लिये राष्ट्रपति चुना गया। लेकिन १९३४ में तीसरी बार उसने राष्ट्रपति चुने जाने से इन्कार कर दिया। अतः उसके स्थान पर उसका मित्र और पुराना साथी बेन्स राष्ट्रपति चुना गया। मसारिक ने वर्षों के परिश्रम के बाद एकान्त वास लिया।

# देश दर्शन

## विदेश यात्रा

### वियना से प्रेग ( प्राहा )

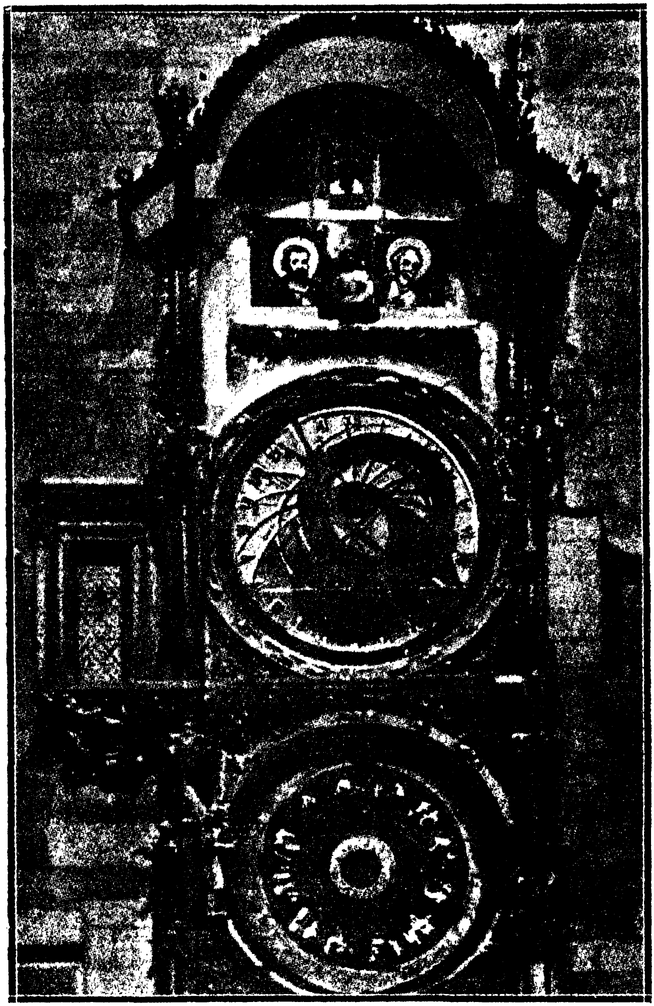
आस्ट्रिया के रमणीक शहर वियना से मैंने चेकोस्लोवेकिया के लिये प्रस्थान किया। बड़ी लड़ाई के पहले चेकोस्लोवेकिया देश प्रायः सब का सब आस्ट्रिया में शामिल था। पर इस देश के चेक और स्लोवेक लोग बहुत समय से आज़ादी के लिये लड़ते रहे हैं। बड़ी लड़ाई के अवसर पर उनके प्रयत्न सफल हुये और उन्होंने चेकोस्लोवेकिया नाम का प्रजातंत्र राष्ट्र बनाया। इसी देश में बोहेमिया का पठार मोरेविया की घाटी और स्लोवेकिया का पहाड़ी भाग शामिल हैं। जब तक ये लोग पराधीन थे तब तक सब मिलकर स्वाधीनता के लिये प्रयत्न करते रहे। स्वाधीन हो जाने पर उनमें आपस में झगड़े होने लगे। ६० लाख चेक लोग ४० लाख स्लोवेक लोगों को दबाना चाहते हैं। मोरेवियन लोग इन लोगों के झगड़ों से अलग रहते हैं। चेकोस्लोवेकिया में ३० लाख जर्मन लोग भी बसे हुये हैं। इनकी समस्या और भी जटिल है। चेक लोग कैथलिक हैं। जर्मन लोगों



चेकोस्लोवेकिया देश के प्रधान नगर प्रेग का विल्सन रेलवे स्टेशन

से सम्पर्क होने से ये बहुत उन्नत हैं। स्लोवेक लोग प्रोटेस्टेन्ट हैं। बाहरी दुनिया से अलग पड़ जाने से स्लोवेक लोग भोले भाले किसान बन रहे हैं। इस देश के अलग हो जाने से आस्ट्रिया को भारी धक्का पहुँचा। बोहेमिया का प्रान्त बड़ा कारबारी है। बाटा के जूते, चेकोस्लोवेकिया की चूड़ियाँ, शीशे का सामान, पेंसिल आदि कई चीज़ों ने हमारे देश को भर दिया।

वियना से ऊपर बढ़ने पर कुछ पहाड़ी भाग में अधिकतर खेती का प्रदेश मिलता है। जगह-जगह पर कारखानों की चिमनियों का धुआँ दिखाई देता है। मार्ग में कई छोटी-छोटी नदियाँ मिलती हैं। पर मोल्डावा (व्लाटावा) नदी का किनारा काफी दूर तक रेलवे लाइन के समानान्तर रहता है। अन्त में हम प्रेग पहुँच जाते हैं। प्रेग स्टेशन बड़ा शानदार है। प्रेग पुराना नाम है। चेक लोग इसे प्राहा कहते हैं। इसी तरह से उन्होंने और भी बहुत से पुराने जर्मन नाम बदल दिये हैं। वे मोल्डावा नदी को (जिसके दोनों किनारों पर प्रेग शहर बसा है) व्लाटावा कहते हैं। इसी तरह पिल्सन शहर को प्लेजन और ब्रुन को ब्रनो कहते हैं। उन्होंने अपने



चेकोस्लोवेकिया देश के "प्राग" नगर में योरुप में सब से पुरानी घंटा घड़ी। यह घड़ी सोलहवीं शताब्दी में बनी थी। घंटा बजने के साथ साथ इसमें तसवीरें भी इधर से उधर चलती हैं और प्रत्येक तस्वीर जनता को एक ख़ास उपदेश देने के लिये रक्खी गई है।

देश से जर्मन भाषा को निकाल सा दिया है । उसकी जगह पर वे अपनी चेक भाषा का प्रयोग करते हैं।

प्रेग शहर बहुत पुराना है। यहाँ कई प्राचीन चीज़ें देखने योग्य हैं। यहाँ की एक बड़ी घड़ी योरुप की पुरानी घड़ियों में से एक है। उस घड़ी में संख्या की जगह पर अलग अलग पाल, पीटर आदि की तस्वीरें लगी हैं। बीच में यीशु और मरियम का चित्र है। सेन्ट लोग यीशु की परिक्रमा करते मालूम होते हैं। यह घड़ी प्रधान सड़क पर लगी है। कुछ भीतर की ओर यहाँ यहूदी लोगों का सबसे पुराना क़ब्रिस्तान है। कई सदियों की पुरानी क़ब्रें यहाँ मौजूद हैं। प्रेग कई (सात) छोटी पहाड़ियों पर बसा है। इसी से इसे मध्य योरुप का रोम भी कहते हैं । यहाँ का विश्वविद्यालय अजायब-घर, किला और महल देखने योग्य हैं। यहाँ एक बहुत बड़ा हाल है । कहा जाता है कि एक बार यहाँ के प्रेज़ीडेन्ट ने देश भर के स्काउट लोगों को इस में दावत दी थी।

यहाँ के लोगों को फौजी ड्रिल का बड़ा शौक है ।




अक्सर गाँव के सारे लोग बाहर ड्रिल करते मिलेंगे। लड़कियाँ भी ड्रिल करती हैं।

नदी के किनारे कई जगह पर नहाने और तैरने के घाट हैं। घाट के भीतर आने के लिये टिकट लेना पड़ता है। टिकट लेने पर भीतर कपड़े रखने के लिये अल्मारी, ताला-चाबी और पहिनने के लिये जाँघिया मिलती है। पर नदी का पानी जून महीने में भी ठण्डा रहता है। इस लिये नहाने वाले थोड़ी देर तैरने के बाद बाहर निकल कर धूप में नंगे लेटते हैं।

# देश दर्शन

## चेकोस्लोवेकिया का जारोस्लैव

जारोस्लैव का गाँव देवदारु के बन के नीचे एक घाटी में बसा है। हर रोज बोझ से भरी हुई बैलगाड़ियों के चलने के कारण गाँव की कच्ची सड़क में गहरी लीक पड़ गई है। सड़क के पास ही एक छोटी नदी बहती है। सरदी की ऋतु में सड़क दो तीन गज़ गहरी बरफ से ढक जाती है। उसी समय नदी का बहना बन्द हो जाता है। नदी की घाटी ठोस बरफ से घिर जाती है। जारोस्लैव बरफ पर तरह तरह के खेल खेलता है।

जारोस्लैव का गाँव बहुत छोटा है। घर दूर दूर बसे हैं। एक घर और दूसरे घर के बीच में चरागाह और खेत बगीचे हैं। चरागाह में लाल और सफेद गाय-बैल चरते हैं। खेतों में किसान गेहूँ, जौ, जई, मटर, चुकन्दर, हाप्स ( एक तरह का पौधा जिससे शराब निकाली जाती है ) और फ्लैक्स ( सन ) उगाते हैं। चुकन्दर की जड़ों से शक्कर, हाप्स की ऊँची बेल में लगे हुये फलों से शराब और फ्लैक्स के रेशों से कपड़े तैयार किये जाते हैं।

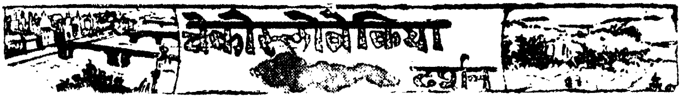
जारोस्लैव के गाँववालों के खेत और बगीचे तो



चेकोस्लोवेकिया का एक पुरुष

अलग हैं। लेकिन दिन के समय उनकी पाँच छः सौ बतखें साथ साथ घूमती और चुगती हैं। इनका माँस खाया जाता है। अंडे बेचे जाते हैं और पंख कपड़ों में लगाने के काम आते हैं। इन्हें कोई आदमी नहीं छेड़ता है। इसलिये वे बड़ी निडर हो गई हैं। अक्सर वे सड़क घेर कर बैठ जाती हैं। गाड़ी वालों को बचा कर खाई की ओर धक्का खाकर गाड़ी निकालनी पड़ती है। पर मोटर की आवाज़ से वे बहुत डर जाती हैं और फड़ फड़ कर एकदम सड़क खाली कर देती हैं। बतखों की सुस्ती से पड़ोस की लोमड़ियों ने कुछ दिन लाभ उठाया। वे चुपचाप बतखों को दबा कर ले जाने लगीं। पर किसानों ने शीघ्र ही बतखों की देख भाल करने वाले लड़के के साथ दो फुर्तीले कुत्ते कर दिये। तब से लोमड़ियों को शिकार का मौका न मिला। दिन में देखने से बतखों का झुंड एक ही मालूम पड़ता है। पर शाम को बतखें फौजी सिपाहियों की तरह एक एक की क़तार में अपने नेता के पीछे पीछे चलकर अपने मालिक (किसान) के घर पहुँच जाती हैं।

जारोस्लैव के घर की छत लाल चौड़ी और ढलवाँ




है। छत का निचला भाग बहुत नीचा आ गया है। हवा की दिशा ( मौसम ) की सूचना देने वाले रंगीन तख्ते छत के ऊपर लगे हैं। इन में बढ़िया कारीगरी की गई है। घर की खिड़कियाँ हरी रंगी हैं। घर के पीछे चारा और खेती का दूसरा सामान रखने की कोठरियाँ हैं।

जारोस्लैव जब किसी पास के नगर में बाजार देखने जाता है तब वह छोटा नीला कोट पहनता है। कोट के ऊपर वह कई चौड़े कालर बाँधता है। उसकी ऊनी पतलून पीले रंग की है। लाल चमड़े के मुलायम जूते घुटने तक पहुँचते हैं। कमर में वह बढ़िया कामदार पेटी (बेल्ट) बाँधता है। उसकी काली टोपी पर लाल या पीली किनारी लगी रहती है। उसकी बहिन बोज़ेना कभी लाल, कभी गुलाबी या भूरा झूला और लहँगा एक में मिला हुआ ( स्कर्ट ) पहनती है। वह लाल मोज़े और काले जूते पहनती है। जारोस्लैव एक स्कूल में पढ़ता है। पर फसल के दिनों में वह अपने बाप को फसल कटाने में भी मदद देता है। कभी कभी वह देवदारु के बन में दूर तक सैर करने जाता है। पहले इस बन में हिरण,

भेड़िया और जंगली सुअर बहुत थे। अब वे कम रह गये हैं।

सरदी की ऋतु में बाहर घनी बरफ गिर जाती है। तब जारोस्लैव घर के भीतर देवदारु की मुलायम लकड़ी पर सुन्दर नक्काशी करता है। उसका बाप लकड़ी के खिलौने और लकड़ी के बर्तन बनाता है। बोज़ेना अपनी माँ को ऊन कातने, रँगने और कपड़ा बुनने में मदद देती है। वह मलमल की चादर और तकिया के गिलाफ बनाती है।

जारोस्लैव का देश नया है। पर लोग पुरानी जाति के हैं। वे पहले पराधीन थे। उनके देश में जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगारी के लोग राज्य करते थे। पर उन्होंने आज़ादी की लगन कभी न छोड़ी। बड़ी लड़ाई में उन्हें अच्छा मौक़ा मिला और वे आज़ाद हो गये।

जारोस्लैव के देश के लोग चेक कहलाते हैं। वे बहुत होशियार हैं। पहाड़ी भागों में रहने वाले स्लोवैक लोग बड़े सीधे होते हैं। चेक लोगों को खेल कूद का बड़ा शौक है। वे किसी न किसी सोकोल (क्लब) के सदस्य

होते हैं। इन सोकोलों में जिमनास्टिक और दूसरी कसरतें नियम पूर्वक होती हैं। कभी कभी सारे देश के सब सोकोल किसी एक जगह पर कसरत ( ड्रिल ) करते हैं। उस समय एक आवाज़ के साथ सब ( कई हज़ार ) लोग एक आदमी की तरह हाथ या पाँव एक साथ आगे बढ़ाते हैं। इनको एक साथ कसरत करते हुये देखने में बड़ा आनन्द आता है।

# स्लोवेकिया

यह चेकोस्लोवेकिया का एक प्रान्त है। इसका क्षेत्र-फल १८,८६५ वर्गमील है। इस प्रान्त का पश्चिमी कार्पेथियन का भाग बहुत पहाड़ी है। किन्तु इस प्रान्त का पश्चिमी किनारा मोरेविया-डैन्यूब के मैदान से और पूर्वी किनारा टीसा के समतल मैदानों से मिला है।

इस प्रान्त का पहाड़ी प्रदेश चार भागों में विभाजित है। यह चारों भाग एक दूसरे से घाटियों तथा बेसिनों द्वारा अलग हैं। और उत्तर से दक्षिण की ओर फैले हैं।

( १ ) यह भाग वृत्ताकार है और डैन्यूब के डेविन नगर से लेकर छोटे कार्पेथियन, श्वेत कार्पेथियन, पूर्वी तथा पश्चिमी बेसकिड होता हुआ स्लोवेकिया और रुथेनिया की सीमा तक फैला हुआ है।

( २ ) गाल्गोक, लघु फाट्रा और ऊँचा टाट्रा की पर्वतीय श्रेणियों का भाग।

(३) नितरा, बड़ा फाट्रा और लघु टाट्रा के पहाड़ी समूह।

( ४ ) स्लोवेकियन ओरे पर्वत की पर्वतीय श्रेणियाँ तथा बिलग शाखाएँ।

बाहरी पट्टी बलुही तथा चिकनी मिट्टी का बनी है। और लगातार चली गई है। सारे ऊँचे प्रदेश की भाँति यहाँ की जलवायु कई प्रकार की है। केवल पूर्व की ओर अधिक सरदी पड़ती है। इस भाग में आबादी बहुत कम है। यहाँ जंगली तथा घूमने फिरने वाली जाति के लोग रहते हैं। ढालों के ऊपर गड़रिये लोग अपने गल्ले लेकर रहते हैं। यह लोग घाटियों में अपने स्थाई मकान बना कर रहते हैं। वाह नदी ऊँचे पहाड़ी प्रदेश की मुख्य नदी है। इस नदी की घाटी ऊँचे टाट्रा से दक्षिण की ओर है। यह लघु टाट्रा के उत्तरी भाग के लिपटाव बेनेस से निकल कर पश्चिम की ओर टर्क के बेसिन में बहती हुई लघु फाट्रा को पार करती है। यह नदी ज़िलीना के समीप दक्षिण की ओर मुड़ती है और कोमारनो के बन्दरगाह के समीप डैन्यूब से मिल जाती है। लिपटाव के बेसिन के समीप हरनाद तथा स्पिस हैं। यहाँ से पूर्व तथा दक्षिण की ओर जाने का प्रसिद्ध मार्ग है। डैन्यूब को एक दूसरा मार्ग और जाता है जो हार्न और

वाह के मार्ग के समानान्तर है और तीसरे भाग को चौथे भाग से अलग करता है।

इस प्रान्त का भीतरी ऊँचा भाग बिल्लोरी तथा चूने के पत्थर का बना हुआ है। इस भाग में परतदार चट्टानें, कच्ची धातु और उष्ण पानी के सोते पाये जाते हैं। पहाड़ी भाग के बीच वाले बेसिनों में सन, पाट, ऊन, लकड़ी, लोहा और शीशे के बड़े बड़े कारखाने हैं। बान्सका बिस्टरीका से आग जलाने का सामान मिलता है। लेकिन कोयले की कमी है इसलिये अधिकाँश काम जल शक्ति ( बिजली ) द्वारा लिया जाता है। हार्न के मध्यवर्ती भाग की भूमि ज्वालामुखी पर्वतों के उद्गारों के कारण उपजाऊ है और सन, पाट, शराब, फल, राई, और जई की उपज होती है। ढालों पर अंगूरों के सुन्दर बाग हैं। यह ज़िला किसी समय में सोने चांदी और ताँबे के लिये प्रसिद्ध था। अब भी यहां चांदी, मैगनीज़, लोहा और दूसरी धातुयें पाई जाती हैं। बांसका, स्टिआवनिका और क्रेमनिका मुख्य खानों के केन्द्र हैं। इसके सिवा लकड़ी तथा कपड़ा बुनने और सूत कातने का घरेलू रोज़गार भी यहाँ होता है। ज़िलीना पश्चिमी और कोस के

पूर्वी व्यापारिक केन्द्र हैं। यह नगर रेलों द्वारा मिले हुये हैं और प्रसिद्ध जंक्शन हैं। जिलीना से मोरेविया और साइलीशिया को डैन्यूब और जबलन का दर्रा होता हुआ मार्ग जाना है। कोसीके से प्रसिद्ध मार्ग हंगारी तथा रुथेनिया को जाते हैं। यहाँ पर छोटे मार्गों तथा सड़कों की बहुत कमी है। यह बात अधिकतर पश्चिमी तथा पूर्वी भाग में है। व्यापारिक केन्द्रों के बीच सड़कें अवश्य हैं। ऊँचे टाट्रा में लम्बे चक्करदार मार्ग बनाये गये हैं। हरनाद की घाटी में प्रेज़ोव, लिपटोव्स्की स्वाटी मिकुलास प्राचीन केन्द्र तथा प्रसिद्ध नगर हैं।

मैदानी भाग मध्य योरुपीय भागों के छोटे भाग हैं और बनावट तथा जलवायु में उनसे मिलते जुलते हैं। मोरावा, वाह, निट्रा होन, हरनाद, ओंडावा और लानोरके के पर्वतों में बड़े बड़े गढ़े तथा खड्ड हैं। इन पर्वतों के बीच कच्ची धातु भी पाई जाती है। निचले प्रदेश दो भागों में बाँटे जा सकते हैं। पहला पश्चिमी भाग जिसका पानी डैन्यूब द्वारा जाता है और दूसरा पूर्वी भाग जिसका पानी टीसा नदी द्वारा जाता है। डैन्यूब नदी का प्रदेश बड़ा उपजाऊ है और उसमें अंगूर के बाग, उपवन तथा

पुष्प वाटिकायें हैं। इस भाग में कोमल जलवायु वाले प्रदेश में मक्का, गेहूँ, जौ, राई, फल, तम्बाकू की पैदावार होती है। यहाँ शराब भी बनाई जाती है। चुकन्दर की चीनी भी यहाँ तयार की जाती है। घोड़े, गाय, बैल, भेड़ आदि पशुओं के पालने का भी काम होता है। शराब बनाने, आटा पीसने, चीनी साफ करने, चमड़ा और तम्बाकू के साफ करने के बड़े बड़े कारखाने हैं। ब्राटिस्लावा और उसके समीपवर्ती प्रदेश में यह कारखाने बहुत हैं। यहाँ के नगरों में पशु तथा खाने के गल्लों के बाजार अधिक हैं। ब्राटिस्लावा और मेरेड लकड़ी के कारखानों के प्रसिद्ध केन्द्र हैं। वाह की घाटी साइलीशिया के कायले की खानों में जाने के लिये प्रधान मार्ग हैं।

स्लोवेकिया, आस्ट्रिया के चेकोस्लोवेकियन प्रान्तों से कहीं पीछे है। यह प्रान्त अब भी अपने व्यापार के लिये बुडापेस्ट की ओर देख रहा है। ब्राटिस्लावा और पारकन व्यापारिक केन्द्र बन रहे हैं। प्रेग नगर धीरे धीरे अपनी प्राचीन सभ्यता तथा राजनैतिक प्रधानता की ओर बढ़ रहा है। ब्राटिस्लावा स्लोवेकिया प्रान्त की

राजधानी है। यहाँ पर हाईकोर्ट तथा स्लोवेक विश्व-विद्यालय हैं। कोसीके में प्रान्त के पूर्वी भाग के लिये हाईकोर्ट का काम होता है।

स्लोवेकिया प्रान्त की जन-संख्या ३६,५८,५५७ है जिसमें ६६ फीसदी स्लोवेक, २१.५ फीसदी मगयार (माज़ार), ४.७ फीसदी जर्मन और २.४ फीसदी यहूदी हैं।

# देश दर्शन

## स्लोवेक भाषा

चेकोस्लोवेकिया प्रजातंत्र राज्य की चेक तथा स्लोवेक दोनों भाषायें एक नहीं हैं। उनके लिखने का ढंग और लिपि दोनों अलग अलग हैं। चेक भाषा स्लोवेक भाषा से इतनी मिलती जुलती है कि बहुत से विद्वानों का मत है कि यह दोनों एक ही भाषा हैं। प्राचीन चेक भाषा के स्वर एक से ही थे। उनका उत्थान भी एक साथ ही एक सा हुआ है किन्तु वर्तमान चेक भाषा जैसी बोहेमिया में लिखी तथा बोली जाती है, स्लोवेक भाषा से कहीं अलग है। मोरेविया प्रान्त की चेक भाषा अब भी स्लोवेक से मिलती जुलती है। केवल बड़े विद्वानों की कठिन भाषा में ही अन्तर मालूम होता है। चेक तथा स्लोवेक भाषा के कोषों में अन्तर बहुत कम है। किन्तु उच्चारण में अन्तर बहुत है। चेक भाषा के विशेषण में "ज़ेड अर्थात् ज़" और स्लोवेक भाषा में "डी ज़ेड" होता है। "र" शब्द का प्रयोग स्लोवेक भाषा में बहुत कम होता है किन्तु चेक भाषा में इसका प्रयोग बहुत होता है। स्लोवेक भाषा में "न, ड, द, और ल ई"

शब्द के पश्चात् होता है किन्तु चेक भाषा में यह बात नहीं होती।

चेक भाषा में शब्दों के उच्चारण में पहले शब्दार्थ पर ज़ोर किया जाता है और लम्बे स्वरों में उच्चारण तेज़ किया जाता है। मामूली ढंग पर स्लोवेक भाषा तीन प्रकार की बोली जाती है। यह ढंग पूर्वी मध्यवर्ती तथा पश्चिमी भागों में अलग अलग हैं। पूर्वी भाग की स्लोवेक बोली चेक बोली से और पश्चिमी स्लोवेक रूसी बोली से मिलती जुलती है।

पूर्वी बोली में "यू" और "आई" में कुछ अन्तर नहीं रह जाता और "ई" के स्थान पर "ओ" का प्रयोग होता है। १९१४ की लड़ाई के पहले स्लोवेक भाषा में पुस्तकें बहुत कम थीं। किन्तु स्लोवेकिया के राष्ट्र की स्थापना होने के कारण इस भाषा की उन्नति हुई है और इस भाषा में बहुत से ग्रन्थ हो गये हैं।

# रूथेनिया या कार्पेथियन रूथेनिया,

रूथेनिया चेकोस्लोवेकिया का एक प्रान्त है। इस प्रान्त का क्षेत्रफल ४,८८६ वर्गमील है। १६२१ की गणना के अनुसार इस प्रान्त की जन-संख्या लगभग ८ लाख है। जिसमें ६१.८ फीसदी रूथेनियन, १७.२ फीसदी मगायर, १३.४ फीसदी यहूदी, ३.३ फीसदी चेक और स्लोवेक हैं। जर्मन, मगायर और यहूदी लोग आम-तौर पर नगरों में रहते हैं। रूथेनियन लोग गरीब किसान हैं। रूथेनियन में ८० फीसदी अनपढ़ हैं। रूथेनियन भाषा में कई प्रकार की बोलियाँ हैं।

रूथेनिया की उत्तरी सीमा हंगारी और गेलीशिया के बीच की पुरानी सीमा है। यह कार्पेथियन पर्वत की पर्वतीय चट्टानें हैं। शेष सभी सीमायें बनाई ( कृत्रिम ) हुई हैं। हंगारी और रूमानिया की सीमायें १६२० ई० की संधि के अनुसार नियत की गई हैं।

इस प्रान्त का अधिकांश भाग पहाड़ी है और फ़्लीस्च कटिबन्ध में स्थित है। पर्वतीय श्रेणियाँ पश्चिम की ओर ४,२५० फुट और सेरनाहोवा पूर्व की ओर




६,५०० फुट से अधिक ऊँची श्रेणी हैं। होवेरला की श्रेणी ६,७३० फुट ऊँची है जिसमें कहीं कहीं पर चिकनी मिट्टी के टुकड़े पाये जाते हैं। पश्चिम की ओर का ऊँचा प्रदेश ज्वालामुखी पर्वतों की चट्टानों का बना है और उसकी ऊँचाई ५,२५० फुट से अधिक नहीं है। इस भाग में कहीं कहीं पर प्राचीन क़िलों के खंडहर पाये जाते हैं। पहाड़ी श्रेणियों के बीच बीच में घाटियाँ हैं जो बेसिनों में जाकर बहुत चौड़ी हो जाती हैं। यह घाटियाँ उपजाऊ हैं। लाटोरीका की घाटी में घने बन पाये जाते हैं।

टीसा नदी और उसकी सहायक नदियों का मैदान प्रसिद्ध है। पर्वतों के कारण इस मैदान में उत्तर तथा पूर्व की ठंडी हवाएँ नहीं आ सकती हैं। दक्षिणी-पश्चिमी भाप भरी हवाओं से यहाँ वर्षा होती है। यद्यपि यह मैदान साल के चार महीनों तक बहुत सर्द रहता है। तो भी खाने के अनाजों तथा अंगूर की खेती शेष ८ महीनों में अच्छी होती है। यहाँ की नदियों में बाँध है तो भी बाढ़ बहुधा आती है जिसके कारण बहुत हानि होती है।

मैदान में मक्का, गेहूँ, आलू और जई की उपज बहुत होती है इसके सिवा मैदान में राई, जौ और तम्बाकू की भी खेती होती है। निचले ढालों में अंगूर, सेब, बेर के बाग बहुत हैं। यहाँ खेती करने का ढंग अच्छा न होने के कारण उपज अच्छी नहीं होती। बोहेमिया की उपज के छठे भाग के बराबर यहाँ उपज होती है। इस प्रान्त की कुल भूमि का २८ प्रतिशत चरागाह है। इन चरागाहों में घोड़े और जानवर पाले जाते हैं। इस प्रान्त की सीमा में कमी हो जाने के कारण प्रान्त के व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा है। इस प्रान्त में कारखाने बहुत कम हैं। लकड़ी की शराब, स्पिरिट, दियासलाई, जलाने की लकड़ी आदि वस्तुयें पैदा होती तथा बनाई जाती हैं। इन वस्तुओं के व्यापार की बृद्धि भी पड़ोसी राष्ट्रों से मेल न होने के कारण नहीं होती है।

रूथेनियन शब्द का प्रयोग उन यूक्रेनियन तथा लघुरूसियों के लिये भी प्रयोग होता है जो पहले आस्ट्रिया के आधीन थे। रूथेनियन शब्द "रशन" अथवा "रेड रशन" का लैटिन रूप है। जब प्राचीन रूथेनो राज्य परतंत्र हुआ तो मास्को के रहने वालों ने उस राज्य

का नाम "रशा" रक्खा क्योंकि वे रूथेनी को एक राष्ट्र मानने के लिये तयार न थे और वहाँ के निवासियों को लिटिल रशन (लघु रूसी) कहने लगे। रूथेनी लोगों ने अपने को रूसी लोगों से अलग करने के लिये यूक्रेनियन शब्द का प्रयोग करना आरम्भ किया। यूक्रेनियन शब्द का प्रयोग तुरको-तातार सीमा के दक्षिणी रूस के निवासियों के लिये होता था। रूथेनी नाम पोलैण्ड, लिथुएनिया और आस्ट्रिया के अधिकार में रहने वालों के बीच जीवित रहा। इस प्रकार रूथेनियन और यूक्रेनियन एक ही हैं।

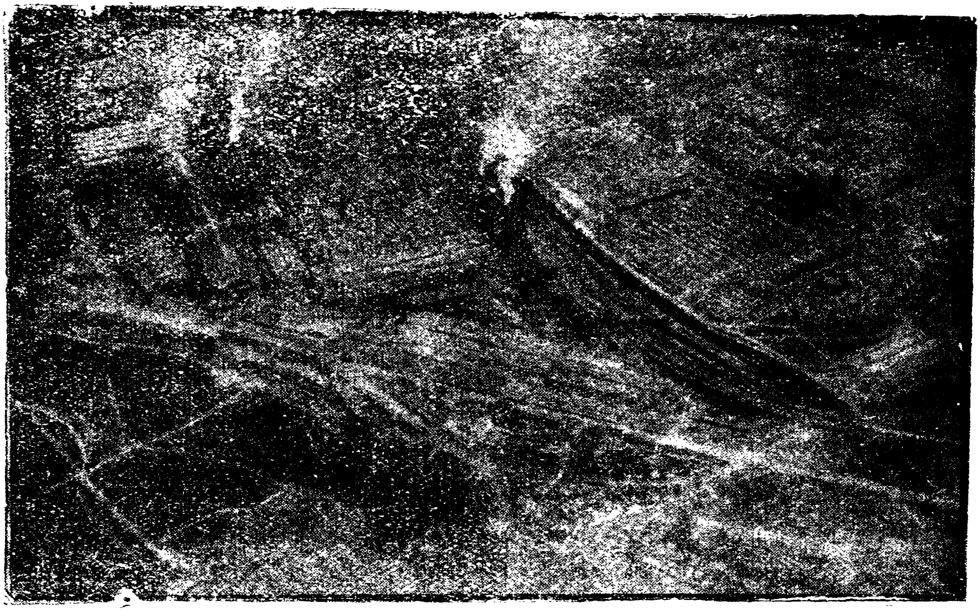
जब पोलैण्ड का बँटवारा हुआ तो कुछ रूथेनी रूसी शासन में चले गये। उनमें से बहुत से लोग रूसी हो गये। रूसी सरकार ने रूथेनी लोगों को रूसी बनाने तथा प्राचीन चर्च को मनाने के लिये भरसक प्रयत्न किया। पोलैण्ड तथा आस्ट्रियन सरकार ने भी रूथेनी लोगों के साथ रूसी सरकार की तरह ही व्यवहार किया। १८०६ ई० में लेम्बर्ग में एक चर्च रूथेनियों के लिये स्थापित किया गया। १८७७ ई० में लेम्बर्ग यूनिवर्सिटी में एक स्थान रूथेनी लोगों को प्रदान किया गया।

# देश दर्शन

१९१४ की बड़ी लड़ाई के बाद पूर्वी गैलीशिया के निवासी रूथेनियन ने अपना एक अलग राष्ट्र बनाने का प्रयत्न किया किन्तु उनका अल्प कालीन राज्य पोलैण्ड में मिला दिया गया। उत्तरी-पूर्वी कार्पेथियन के रूथेनी लोग चेकोस्लोवेकिया राष्ट्र में मिला दिये गये और उनको राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिये काफी विश्वास भी दिलाया गया। उनका एक प्रान्त चेकोस्लोवेकिया राज्य से अलग बना दिया गया। रोमानियन माइनारटी संधि के अनुसार बसारेबिया और बुकोविना के रूथेनी लोग रोमानिया के अधिकार में आ गये। १९२८ ई० में रूथेनी लोगों की संख्या पोलैण्ड में ३८,८३,०००, चेकोस्लोवेकिया में ४,६१,८४६, रूमानिया में ७,९२,०००, रूस में ७,५०,००० और कनाडा में ५,००,००० थी। कुछ थोड़े से हंगरी और यूगोस्लेविया में भी थे। इनमें से कोई भी स्वतंत्र नहीं हैं।



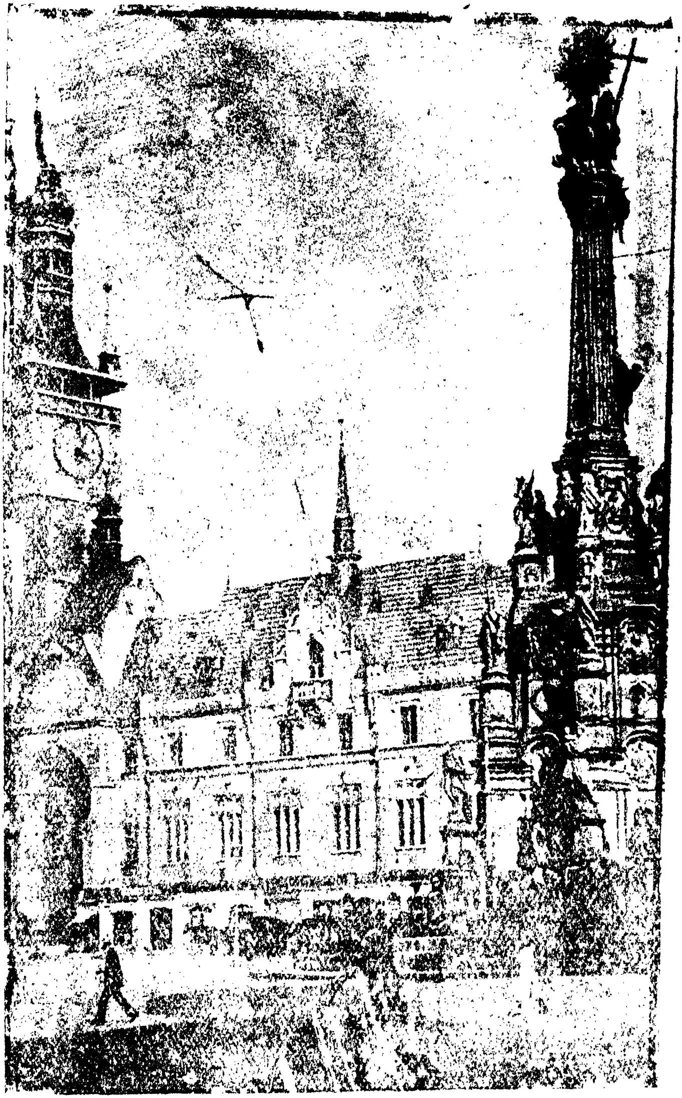
(१) चेकोस्लोवेकिया का बाटा नगर—यहाँ हरसाल करोड़ों जूते बनाये जाते हैं। बाटा कारखाने का संस्थापक १८ वर्ष की उम्र में सन् १८४८ ई० में ज़िलन नगर में मोची का काम करता था। उस समय ज़िलन नगर की आबादी केवल ४००० थी। १९३२ ई० में जब बाटा महाशय मरे तो ज़िलन नगर की जन-संख्या बढ़कर ४०,००० हो गई। १२००० मनुष्य तो उसके कारखाने में ही काम करते थे।



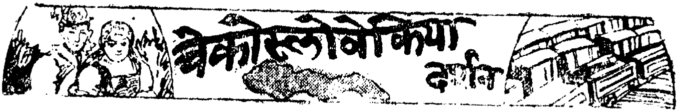
( २ ) स्कोडा—का प्रसिद्ध फौजी कारखाना यह कारखाना पिलज़न ( प्लिज़न ) में स्थित है। यहां पहले तोपें और बन्दूकें बनती थीं। इस समय यहाँ हवाई जहाज़ बनते हैं।



( ३ ) टाट्रान्स्का लोमनिका का शीतकाल में एक दृश्य । यह स्लोवेकिया का एक स्वास्थ्यप्रद स्थान है ।



( ४ ) मोरेविया के ओल्मुट्ज़ ( ओलोमोक ) का एक दृश्य ।




# चेकोस्लोवेकिया के प्रसिद्ध नगर

चेकोस्लोवेकिया में दो तरह के नगर पाये जाते हैं। एक तो वे नगर जो बहुत प्राचीन काल में बसाये गये थे और इधर उधर सामान पहुँचाने के कारण व्यापारी बन गये हैं। दूसरे वे नगर हैं जो प्रधान मार्गों पर थे और वहाँ मध्य काल ( मिडिल एजेज़ ) में किले बनाये गये थे। अब भी उनकी दीवारों और गुम्बदों के खंडहर बाकी हैं।

बोहेमिया के नगर योरुपीय ढंग के हैं। क्योंकि उन पर जर्मनी तथा फ्रान्स का प्रभाव पड़ा है और बहुत समय से वहाँ पर जर्मन लोग बसे हैं।

प्रेग—चेकोस्लोवेकिया और बोहेमिया की राजधानी है। यह ब्लाटावा नदी की एक शाखा पर स्थित है। नगर का अधिकांश भाग नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। इस नगर के मकान चबूतरे की भाँति ढालू बने हुये हैं। मकानों के बीच बीच में पार्क बने हुये हैं। नगर के भाग घाटियों तक चले गये हैं। प्राचीन प्रेग में एक रिंग ( गोला ) या बाज़ार है। जहां चौद-

९वीं सदी का बना हुआ एक बड़ा हाल है। यहाँ पर टीन चर्च और टीचो ब्रेह के गुम्बद हैं। प्राचीन नगर के अन्त में सेलेटना और पाउडर टावर हैं। प्रीकोपी और उसकी प्राचीन खाई है। यह और प्राचीन नगर के क़िले-बन्दी वाले स्थान वर्तमान समय में पार्क का काम देते हैं। नये नगर में प्राचीन गलियाँ तथा प्राचीन स्मारक तो नहीं हैं किन्तु और दूसरे देखने योग्य स्थान हैं। यहाँ पर नेशनल म्यूज़ियम है जो १८९१ ई० में बना है। वेन्सेजलास नामक स्थान पर १४ वीं सदी का बना हुआ कारलोव चर्च है। नदी के पश्चिमी किनारे पर अधिकांश रहने के मकान हैं। इस भाग में हाडकैनी की पहाड़ी है जिसकी चोटी पर बोहेमिया के बादशाह के महल बने हुये हैं। इन महलों में अब प्रेसीडेन्ट के रहने का स्थान तथा चेकोस्लोवेकिया सरकार के प्रधान दफ़्तर हैं। महल के केन्द्रीय भाग में सेन्ट विटस का कैथीड्रल है। प्रेग में ओपेरा ( नाच तथा गाने घर ) बहुत हैं जहाँ पर लोग मन बहलाव के लिये इकट्ठा होते हैं। नगर में तीन प्रधान ओपेरा घर हैं।

प्रेग चेकोस्लोवेकिया का व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ पर

बहुत से कारखाने हैं। यहाँ पर आटा पीसने, चीनी बनाने, शराब चुवाने, चमड़ा तयार करने, रसायन बनाने, लकड़ी लोहे आदि के सामान तयार करने, खाने के सामान तैयार करने, कृषि सम्बन्धी सामान बनाने, बड़ी बड़ी मशीनों के बनाने आदि के बड़े बड़े कारखाने हैं। यहाँ पर नदियों द्वारा स्टीमर भी आते हैं और यह रेलों का एक बड़ा केन्द्र है। यहां साल में दो बार व्यापारिक मेला लगता है।

नगर में जर्मन तथा चेक विश्वविद्यालय हैं। यहाँ बहुत से रोजगार सम्बन्धी स्कूल भी हैं। इस नगर के मकान बड़े सुन्दर तथा मनोहर हैं जिनके देखने के लिये दुनिया के कोने कोने से लोग आते हैं। प्रेग नगर की जन-संख्या ७ लाख है। जिनमें ६४ फी सदी चेक और शेष जर्मन हैं। कार्ल्सबाड, मरीनबाड और फ्रेन्ज़ेनबाड तीन प्रसिद्ध स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान हैं। इनके बहुत से छोटे छोटे झरने हैं। इनके चारों ओर पहाड़ियां तथा जंगल हैं। किनारे किनारे पर सुन्दर महल बने हैं।

प्लज़ेन बोहेमिया का प्रसिद्ध नगर है, यहां की जन-संख्या लगभग १५,००,००० है। बूडेजोवाइस, चेब,

टेपलिससानाव, मोस्ट, लिबेरिक, उस्टी जब्लोनेक आदि दूसरे बोहेमिया के प्रसिद्ध नगर हैं।

मोराव्स्क आस्ट्रावा साइलीशिया का मुख्य नगर है। यह नगर साइलीशिया के कोयले की खानों के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। इस नगर में बहुत बड़े बड़े कारखाने हैं। इस नगर की जन-संख्या लगभग १,५०,००० है।

मोरेविया और स्लोवाकिया में बहुत नगर नहीं हैं। ब्रनो या ब्रन नगर मोरेविया की राजधानी है इस नगर की स्थिति बहुत सुन्दर स्थान पर है। यह नगर पहाड़ियों तथा बनों के बीच स्थित है। यह सुन्दर नगर आस्ट्रियन योरुप के कारखानों का केन्द्र है। इस नगर में सुन्दर छोटी घुमावदार गलियाँ हैं। बड़ी बड़ी सड़कों में सुन्दर बेल बूटेदार वृक्ष लगे हुये हैं। इस नगर की जन-संख्या लगभग ३ लाख है जिसमें ७५ फी सदी चेक और २१ फी सदी जर्मन हैं। स्पीलबर्ग का क़िला पहाड़ी पर है। यह क़िला वर्तमान समय में जेल का काम देता है। इस क़िले में सिलवियो पेल्लीको नाम का व्यक्ति १८२२ से १८३० तक क़ैद रहा। निचली पहाड़ियों पर सेंट पीटर का

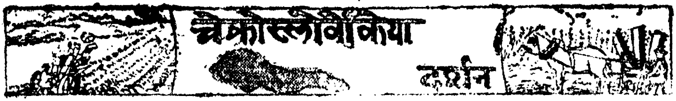
कैथीड्रल है। सेंट जैकब का प्रसिद्ध एक गिरजाघर भी यहां पर है। इस नगर में सुप्रीम कोर्ट ( सब से बड़ा न्याया-लय ) तथा मसारिको यूनिवर्सिटी है। यह नगर चेको-स्लोवेकिया के ऊनी तथा सूती कपड़े के कारखानों का केन्द्र है।

ब्राटिस्लावा:—यह नगर डैन्यूब नदी के बायें किनारे पर स्थित है। इस नगर की स्थिति नदी और निचले कार्पेथियन के ढालों के बीच में है। ढाल पर अंगूर के बाग हैं। यह नगर स्लोवाकिया प्रान्त की राजधानी है। यह नगर हंगारी की राजधानी भी रह चुका है। यह नगर चेकोस्लोवेकिया का डैन्यूब नदी का प्रसिद्ध बन्दरगाह तथा रेलवे जंकशन है। इस नगर की स्थिति बड़े मार्के की है। यहाँ की जनसंख्या १ लाख २५ हज़ार है। नगर में चेकोस्लोवेक, मगायर ( माजार ) और जर्मन लोग रहते हैं। सूत कातने, लोहे, चमड़े आदि के बड़े बड़े कारखाने हैं। यहाँ पर रसायन बनाने के कारखाने भी हैं। कागज़, लकड़ी के सामान, तम्बाकू आदि के भी बड़े बड़े कार-खाने हैं। यहां पर जहाज भी बनाये जाते हैं। अंगूर तथा गल्ले का व्यापार इस नगर द्वारा खूब होता है। यहाँ के बन्दरगाह में ३०,००,००० टन सालाना का

व्यापार हो सकता है। स्चलासबर्ग के प्राचीन महल २७० फुट ऊँचे पठार पर डैन्यूब नदी के ऊपर बने हैं। गोथिक कैथीड्रल, म्यूजियम, फ्रांन्सिस्कन गिरजा घर, टाउन हाल आदि दूसरे प्रसिद्ध भवन हैं। इस नगर में अन्तर्राष्ट्रीय डैन्यूब कमीशन का दफ्तर है। इस नगर का प्राचीन नाम प्रेसवर्ग है।

कोसीके—( कोस चाऊ या कास्सा ) स्लोवेकिया का प्रसिद्ध नगर है और हरनाद नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। ट्राएनन की संधि के अनुसार यह नगर हंगरी ने चेकोस्लोवेकिया को १६२० ई० में दिया था। यह नगर तीन ओर से पहाड़ियों और बनों से घिरा हुआ है। पहाड़ियों के ऊपर अंगूर के सुन्दर बगीचे हैं। प्राचीन नगर के चारों ओर सुन्दर मजबूत दीवार है। यहां पर सेंट एलिजबेथ का प्रसिद्ध केथीड्रल है। इस नगर में ऊनी, शराब, और लकड़ी के बड़े बड़े कारखाने हैं।

ओल मुत्ज—मोरेविया का तीसरा बड़ा प्रसिद्ध नगर है। यहां पर पन्द्रहवीं सदी का एक व्यापारियों का घर है। यह अब नगर का टाउन हाल है। यहां पर एक प्राचीन बड़ी घड़ी है जिससे तारों का ज्ञान होता है।




# चेकोस्लोवेकिया के उद्यम तथा कारखाने

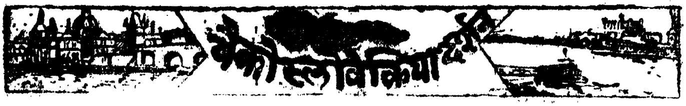
चेकोस्लोवेकिया के ४० प्रतिशत लोग खेती का काम करते हैं और ३४ प्रतिशत कारखानों में लगे हैं। इस देश की भूमि के ४२ प्रतिशत भाग में खेती होती है, १८ प्रतिशत भूमि में चरागाह हैं। बोहेमिया की भूमि बड़ी उपजाऊ है और बड़ी अच्छी उपज होती है, किन्तु पूर्वी भाग में पैदावार कम होती है। आलू, राई और जई की उपज काफी होती है किन्तु गेहूँ और दूसरे खाने के अनाज देश वासियों के भोजन के लिये काफी नहीं होते, इस लिये बाहर से मँगाया जाता है। इस का मुख्य कारण यह है कि यहां के निवासियों ने कारखानों में बड़ी उन्नति की है। यहाँ पर चुकन्दर बहुत पैदा की जाती है। इसकी शराब तथा चीनी बनाई जाती है। इन के बनाने के लिये बड़े बड़े कारखाने हैं। जौ तथा हाप की उपज भी बहुत होती है और इन से बड़े बड़े कारखानों में अच्छी शराब बनाई जाती है।

अंगूर, सेव, नाशपाती, बेर आदि फल बड़ी मात्रा में पैदा होते हैं। इन फलों के देश में बड़े बड़े भाग हैं।

फूलों की भी पुष्प वाटिकाएँ बहुत हैं। भेड़ बकरी और दूसरे पशु भी देश में पाले जाते हैं। सुअर अन्य पशुओं से कम नहीं पाले जाते और बड़े काम के होते हैं।

अपने क्षेत्रफल के हिसाब से चेकोस्लोवेकिया योरुप में सब से बड़ा कारखानों का देश है। १९३३ ई० के अन्त में इस देश में लगभग १२००० कारखाने थे। ये कारखाने तीन प्रकार के हैं। ( १ ) वह कारखाने जिनको कच्चा सामान देश के अन्दर ही मिल जाता है इन में शराब, चीनी, शीशा, लकड़ी आदि के कारखाने हैं। ( २ ) वह कारखाने जिनको कुछ कच्चा सामान देश के अन्दर मिलता है और कुछ बाहर से आता है। इन में लोहा, ताँबा, पीतल, चमड़ा और रसायन के कारखाने हैं। ( ३ ) वे कारखाने हैं जिनको सारा कच्चा माल बाहर से मंगाना पड़ता है, जैसे कपड़े और तेज़ाबी नमक के कारखाने।

चुकन्दर की शक्कर बनाने में चेकोस्लोवेकिया का नम्बर दुनिया में बहुत बढ़ा चढ़ा है। चीनी बनाने के अधिकांश कारखाने बोहेमिया में हैं। मोरेविया और स्लोवेकिया में भी काफी कारखाने हैं। १९३३ ई० में




कुल ३,००,००० टन ( ७५,००,००० मन ) चीनी चेकोस्लोवेकिया में तैयार हुई थी।

मोरेविया प्रान्त में जौ की उपज बहुत होती है, बोहेमिया में हाप की उपज होती है। इन दोनों से प्रसिद्ध पिल्सनेर शराब बनाई जाती है। शराब बनाने के अधिकाँश कारखाने बोहेमिया प्रान्त में हैं। मोरेविया और स्लोवेकिया में आलू तथा चुकन्दर की शराब बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं। लगभग सभी प्रान्तों में शराब बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं।

देश के बड़े बड़े कारखाने बोहेमिया प्रान्त में हैं। यहाँ पर लोहा, फौलाद और मशीनों के तयार करने के बड़े बड़े कारखाने हैं। यहाँ अधिकाँश लोहा स्वीडन से स्टेटिन और ओडर नदियों द्वारा आता है।

शीशा और मिट्टी के बर्तन बनाने का काम बोहेमिया में प्राचीन समय से हो रहा है। शीशे के कारखाने बोहेमिया में उत्तर-पूर्व की ओर जंगली इलाकों में हैं, क्योंकि वहाँ पर उन्हें लकड़ी भट्ठी में जलाने के लिये काफी मिल सकती थी, जैसे जैसे कोयले का प्रयोग

बढ़ता गया, ये कारखाने जल तथा स्थल मार्गों के समीप आते गये। जब्लोनेक्र ज़िला शीशे के कारखाने का बहुत समय से केन्द्र रहा है। यहाँ पर शीशे के रंग बिरंगे सामान बनाये जाते हैं। लाल, हरे, नीले आदि रंगों के शीशे जिस चतुरता से तयार किये जाते हैं वह कला देखने योग्य है।

यहाँ के निवासी अपने घरों में इन्हीं रँग बिरँगे शीशों के बटन, मोती, नग और माले तयार करते हैं।

चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने का काम भी इस देश में बहुत काल से होता आया है। कोलिन मिट्टी बोहेमिया प्रान्त में पाई जाती है। यह बड़ी अच्छी चीनी मिट्टी है। यह कारलोवी वारी के ज़िले में बहुत पाई जाती है। इस जिले में चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने के बहुत से कारखाने हैं।

पिछले कुछ बर्षों में सूती कपड़ों के कारखानों ने बड़ी उन्नति की है। बोहेमिया तथा स्लोवेकिया के सूती कारखानों के सूती कपड़ों की माँग पास पड़ोस के देशों में बहुत है।




चमड़े के कारखाने भी यहाँ बड़ी उन्नति कर रहे हैं। टामस बाटा नामक चेक एक बड़ा साहूकार था। उसने बाटा नामक चमड़े के कारखाने अपने जीवन काल ही में जर्मनी, पोलैण्ड, यूगोस्लेविया और इँगलैण्ड आदि देशों में खोले थे। बाटा कम्पनी के जूते संसार भर में प्रसिद्ध हैं।

बड़े बड़े कारखानों के हो जाने से घरेलू रोज़गार बहुत कम हो गये हैं, तो भी बोहेमिया के कुछ ज़िलों में औरतें सुन्दर बेलबूटों का काम करती हैं।

चेकोस्लोवेकिया के जर्मनी में मिल जाने से जर्मनी की आर्थिक और सैनिक शक्ति बहुत बढ़ गई है।

१७—यूगोस्लेविया, १८—ग्रीस, १९—इटली, २०—स्पेन, २१—पुर्तगाल, २२—जर्मनी, २३—हंगारी, २४—स्वीज़रलैंड, २५—चेकोस्लोवेकिया, २६—अल्सेस लारेन।

**अफ्रीका**—१—मिस्र, २—सूडान, ३—एबीसीनिया, ४—जेंजीबार और पम्बा, ५—मेडेगास्कर, ६—कीनिया ७—यूगांडा, ८—पूर्वी पुर्तगाली अफ्रीका, ९—बेल्जयन कांगो, १०—रोडेशिया, ११—दक्षिणी अफ्रीका, १२—पश्चिमी पुर्तगाली अफ्रीका, १३—नाइजीरिया, १४—सहारा, १५—मरक्को, १६—अल्जीरिया, १७—ट्यूनिस, १८—ट्रिपली, १९—लाइबेरिया, २०—मारीशस द्वीप।

**उत्तरी अमरीका**—१—कनाडा, २—न्यूफाउंडलड; ३—संयुक्त राष्ट्र अमरीका, ४—मेक्सिको, ५—पनामा, ६—मध्य अमरीका, ७—पश्चिमी द्वीपसमूह।

**दक्षिण अमरीका**—१—कोलम्बिया, २—गायना, ३—वेनिज़ेला, ४—इक्वेडार, ५—पीरू, ६—बोलिविया, ७—चिली, ८—पेरेग्वे, ९—यूरुग्वे, १०—ब्रेज़ील, अर्जेन्टाइना।

**आस्ट्रेलिया**—१—आस्ट्रेलिया, २—टस्मेनिया, ३—न्यूज़ीलैंड, ४—न्यूगिनी, ५—फिजी द्वीप, ६—प्रशान्त महासागर के द्वीप।

**अन्वेषक**—१—मार्कोपोलो, २—कोलम्बस, ३—वास्को डि-गामा, ४—कुक, ५—लिविंग्सटन, ६—स्टैनली, ७—ड्रेक, ८—स्वेन हेडिन, ९—लारेंस, १०—पियरी, ११—नान्सेन।

**नगर**—१—प्रयाग, २—कलकत्ता, ३—बम्बई, ४—बनारस, ५—मद्रास, ६—लाहौर, ७—लन्दन, ८—पेरिस, ९—बर्लिन, १०—मास्को, ११—न्यूयार्क, १२—टोकियो, १३—बग़दाद, १४—क़ाहिरा, १५—यरूशलम, १६—मक्का, १७—पेकिंग १८—हांगकांग :

**नदी**—गंगा, यमुना, सिन्ध, नर्मदा, गोदावरी, महानदी, ब्रह्मपुत्र, इरावदी, यांग्ज़ी, ह्वांग हो, अमूर, दजला-फ़रात, वाल्गा, राइन, डेन्यूब, मिसीसिपी, एमेज़न, नील, कांगो, सेन्ट लारेंस।

**पर्वत**—हिमालय, अल्प्स, एँडीज़, राकी।

**नहर**—स्वेज़, पनामा, चीन की शाही नहर ( ग्रांड केनाल )।

**कारबार**—कागज़, लोहा, दियासलाई, मोटर, पेन्सिल, मिट्टी का तेल, पुतलीघर, जहाज, रेल, हवाई जहाज़।

**सभ्यता**—वैदिक, एसीरियाई, प्राचीन मिस्री, इन्का, माया, यूनानी, रोमन।

**अग्रिम मूल्य एक प्रति का ।=), वार्षिक ४)रु०, समस्त पुस्तक माला का २०)रु०।**

**DESH-DARSHAN** Regd. No. A–
*November 1939*

अगले महीने ( दिसम्बर १६३६ )
में

# आस्ट्रिया

का

इसी तरह का

## सचित्र वर्णन रहेगा

—○:○:○—

यदि आप अभी तक

## देश-दर्शन

के

ग्राहक नहीं बने हैं

तो

## ४) रु० भेजकर

एक वर्ष के लिये ग्राहक बन जाइये ।

## मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद ।

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B. A.)
and Printed by R. S. Misra, at the Bhugol Press,
243, Jamuna Road, Allahabad.